Digamber Jain—Surat. Regd. No. B-744.

SHREE JAIN LIBRARY NO SIROHI STATE Date........19

दिगंबर जैन

वीर सं० २४४९ आश्विन। विक्रम १९७९.

संपादक—
मूलचंद किसनदास कापड़िया—सूरत।

वर्ष १६ वां अंक १२वां ई. सन् १९२३

विषयानुक्रमणिका।

नं०	विषय	पृष्ठ
१–२.	सम्पादकीय वक्तव्य, रतलाम बोर्डिंगका उत्सव....	१–५
३.	जैन समाचार संग्रह	६
४.	धूम्रपान निषेध (आर. टी. लाल जैन फुलेरा)	९
५.	क्रोधका प्रताप (पं० चांदमल काला विशारद)....	१४
६.	श्रीकेशरियाजी तीर्थ-आगाही (नवनीतलाल जरीवाला)	१५
७.	प्रातःकर्म विचार (मोहनलाल मथुरदास काणीसा)....	१८
८–९.	गज़ल, विना अंगके अंगी कैसे? (सुमतिचंद्र जैन)	२३
१०.	लाखकी उत्पतिमें घोर हिंसा (पं० सोनपाल उपदेशक)	२४
११.	बाल परिचर्या और औषधिसेवनसे हानियाँ	२५
१२.	दो मित्रोंका वार्तालाप (पं० गोरेलाल पंचरत्न)....	२८
१३.	प्रवृत्ति (मास्तर सी. जी. गांधी)	३०
१४.	दशलाक्षणी पर्वके समाचार	मुख पृष्ठ

पेशगी वार्षिक मूल्य रु० १–१२–० पोस्टेज सहित।

दशलाक्षणी पर्व ।

દશલાક્ષણી પર્વના સમાચાર અમોને અનેક સ્થળોએથી મળ્યા હતા જેનો સારાંશ નીચે મુજબ છે—

સુરત-માં આ વર્ષે આ પર્વ અપૂર્વ ઉત્સાહથી ઉજવાયો હતો. નિત્ય રાત્રે ગુજરાતીના મંદિરમાં શાસ્ત્ર સભા થતી હતી જેમાં ૧૦૦-૧૨૫ સ્ત્રી પુરૂષો ને બાળકો લાભલેતા હતા. શાસ્ત્ર સભા પછી રોજ દિ૦ જૈન પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓના ગાયન, સંવાદ, ધાર્મિક ભાષણ, રાસ વગેરે થતા હતા. ૮ દિવસ અમોએ ને ૨ દિવસ માસ્તર જીવરાજભાઇએ શાસ્ત્ર વાંચ્યું હતું. ત્યાગ ધર્મને દીવસે દાન ધર્મપર થયેલા ઉપદેશની અસરથી દાનની મોટી ટીપ સુદ ૧૫ સુધીમાં ભાઇ ઠાકોરદાસ ચુડગર, મગનલાલ પાનાચંદ, ગમનલાલ સુતરીયા, ભાઇ સરદયા વગેરેના સારા પ્રયાસથી થઇ હતી જેમાં કુલે રૂ. ૧૦૦૯ાા ભરાયા હતા, જે રોકડા નીચે મુજબ મોકલી અપાયા છે—

૧૨૫) વિહાર સંકટ નિવારણ ફંડ
૭૬) તીર્થ રક્ષા ફંડ (૭૬.ધરના)
૧૭ાા) જીવ દયા (જીવો છોડાવ્યા)
૨૮૪) આબુજી જીર્ણોદ્ધાર ફંડ
૨૫) રૂ. બ્રહ્મચર્ય આશ્રમ જયપુર
૨૫) ઔષધાલય બડનગર
૨૫) અનાથાલય બડનગર
૨૫) અનાથાલય દિલ્હી
૨૫) જૈન સિ૦ વિદ્યાલય મોરેના
૨૫) સ્યાદ્વાદ મહાવિદ્યાલય-કાશી
૨૫) મહાવિદ્યાલય બ્યાવર
૨૫) બ્રહ્મચર્ય આશ્રમ કુંથલગિરી
૨૫) ઉદેપુર મેવાડ પ્રાં૦ વિદ્યાલય
૨૫) દિ૦ જૈન શિક્ષા મંદિર જબલપુર
૨૫) ભીંડ દિ૦ જૈન વિદ્યાલય
૩૦) દિ૦ જૈન પાઠશાલા સુરત
૨૦) " " શ્રાવિકાશાળા "
૧૦) પપૌરા પાઠશાળા
૧૦) શ્રાવિકાશ્રમ બમ્બઇ
૨) મોકલવાનો ખર્ચ

અત્રેની પાઠશાલા હાલ ઘણાજ સારા પાયાપર ચાલે છે. આશરે ૪૦-૪૫ વિદ્યાર્થી લાભ લઇ રહ્યા છે, શ્રાવિકા પાઠશાળા પણ ચાલે છે. જેમાં બપોરે ત્રણ કલાક ૨૦-૨૫ બ્હેનો ને બાલકીઓ લાભ લે છે.

વાંચ-થી મુલચંદ કશ્વરદાસ લખે છે કે અસલાલીના ચતુરભાઇ વેણીચંદે સોલહકારણ ઉદ્યાપન કર્યું હતું જેથી પાલડી, મહીજ, હાથીજણના બધા ભાઇયો આવ્યા હતા. ઉપજ પણ સારી થઇ હતી. વૈશાખ માસમાં બ. સુરેંદ્રકીર્તિજી હાથીજણ આવેલા ત્યારે ન્યાતમાં તકરારો વધી પડી હતી ને જમણ બંધ થઇ ગયા હતા પણ આ ધર્મના દિવસોએ સમાધાન થઇ ગયું છે.

ભુવાનગઢ-અહીં દહેરા । પુજારી રતનજી મહારાજે શ્રાવણ સુદ ૧ થી ૧ાા માસના ઉપવાસ આદર્યા હતા પણ તેમનું સમાધિ મરણ ભાદરવા સુદ ૧૧ને દિને થયું હતું. શા. પાનાચંદ ગુલાબચંદ (વાંકાનેર) નિત્ય ઉપદેશ આપતા હતા. મહારાજની વૈયાવૃત્ય સારી રીતે થઇ હતી. દાંતાના રાણા તરફથી મહારાજનો ફોટો પણ લેવાયો હતો (જે અમને મળ્યો છે અને બનશે તો ખાસ અંકમાં પ્રકટ કરીશું) અત્રે પાઠશાલાની વ્યવસ્થા પણ થઇ છે.

ફત્તેપુર-કવલાહાર, દેશવ્રત, ફલવ્રત વગેરે વ્રત ૫૦ આદમિયોએ કર્યાં હતાં. આ વર્ષે ભાઇ લલ્લુભાઇ રાયચંદના પધારવાથી દરેક ક્રિયા નિયમિત થતી હતી. શાસ્ત્રસભા પણ રોજ થતી હતી. રૂષિમંડળ પૂજા પણ ભણાઇ હતી. વરઘોડો પણ નીકળ્યો હતો, ઘણી સ્ત્રીઓએ ૧ વર્ષ સુધી રડવા કુટવા ન જવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી હતી તથા પાંચ કે સાત વર્ષ સુધી છાણાં ન થાપવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી હતી. ૫૦૦) દાનની ટીપ થઇ હતી. તીર્થરક્ષાફંડ પણ થયું હતું. મંદિરમાં ખુટતાં શાસ્ત્રો મંગાવવાનું નક્કી થયું હતું. સારાંશકે આ પર્વ નિર્વિઘ્ને સારી રીતે ઉજવાયો હતો. દર વર્ષે ભાઇ લલ્લુભાઇ અત્રે પધારે એમ દરેકની ઇચ્છા છે.

(વધુ પછલાં પુઠાંપર)

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष १६ वाँ. || वीर संवत् २४४९. आश्विन वि० सं० १९७९. || अंक १२ वाँ.

संपादकीय वक्तव्य

उत्तम क्षमा ।

पर्युषण पर्व सानंद पूर्ण हुआ है व स्थान २ पर यह पर्व अनेक प्रकारकी धर्मप्रभावनाके साथ मनाया गया था ऐसे समाचार पर्युषणपर्वके विषयमें अन्यत्र प्रकट हैं। पर्युषण पर्वके अंतमें हमारे सभीभाई प्रतिपदाके दिन परस्पर उत्तम क्षमा कहते हैं व सगेसंबंधियों वर्षभरके अपराधके लिये उत्तम क्षमावर्णीके पत्र लिखते हैं यह सामान्य प्रणाली होगई है। हमारे पास भी उत्तम क्षमावणीके अनेक पत्र आये हैं जिन सबका पृथक्२ उत्तर न दे सकनेके कारण हम यहां ही सबसे वर्षभरके अपराधके लिये उत्तम क्षमाकी याचना करते हैं। वर्षभर दिगम्बर जैनमें भी लेख व सत्य समाचारादि लिखनेमें हमसे किसी भाईका मन क्लेशित हुआ हो तो उसके लिये भी उनसे क्षमाके प्रार्थी हैं। उत्तमक्षमा मात्र मुखसे कहनेसे नहीं होती परंतु वह क्षमा हृदयकी होनी चाहिये और अबसे उत्तमक्षमा धर्मका पालन हमसे बराबर होता रहे ऐसा हमें हरएक कार्य व वर्ताव करते समय स्मरण रखना चाहिये। मुंहसे उत्तम क्षमा बोलदेना व पत्रमें उत्तम क्षमा लिखदेने मात्रसे सच्ची क्षमा नहीं होगी परंतु हृदयसे कषाय भावको त्यागकर सच्चा उत्तमक्षमाधर्मका पालन करना चाहिये।

* * *

वीर निर्वाणोत्सव ।

हमारे अंतिम (२४वें) तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीका निर्वाण पावापुरीमें हुए आज २४४९ वर्ष हुए हैं। श्री महावीर प्रभुका निर्वाण कार्तिक वदी (गुजराती आश्विनवदी) ०))को प्रातःकाल पावापुरीमें हुआ था, तबसे हरएक स्थानपर दीपावली उत्सव मनाया जाता है, वीर निर्वाण उत्सव होता है, निर्वाण लाडू चढता है व हरएक स्थानपर दिये जलाये जाते हैं। यह दीपोत्सवी (दिवाली)का त्योहार जो सार्वजनिक हो गया है उसका प्रथम कारण जैनियोंका वीरनिर्वाण उत्सव ही है। अमावस्याके प्रातःकाल हरएक मंदिरमें वीरनिर्वाण पूजन समय संक्षिप्त-महावीरचरित्र पढ़कर ही निर्वाणकांड भाषा गाथा पढ़ना चाहिये व उसके बाद ही निर्वाण लाडू चढ़ाना चाहिये तथा अभिषेकादि करना चाहिये

दीवालीमें पढने योग्य संक्षिप्त महावीरचरित्र दो आनेमें हमसे मिल सकती है जो हरएक स्थान पर पढा जाना चाहिये व उसको प्रभावनामें बांटना भी चाहिये तथा रात्रिको सभा करके महावीरके गुणोंका वर्णन होना चाहिये।

* * *

दीवाली पूजन। हरएक स्थानपर दिवालीके दिन शामको दीवाली पूजन होता है व नई बहियोंका मुहूर्त होता है, वह कई स्थानोंपर अभीतक मिथ्यात्वी रूढिसे होता है ऐसा न होकर पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजी द्वारा सम्पादित दीपमालिका विधान (जो एक आनामें हमसे मिलता है)से सरस्वतीपूजन होना चाहिये व नई बहियोंका मुहूर्त जैन विधिसे ही करना चाहिये।

* * *

वीर संवत। हरएक धर्ममें बड़े२ प्रधानपुरुष होगये हैं उनके स्मरणमें उनकी मृत्यु समयसे उनके नामका संवत् चलाया जाता है और इस प्रकार इसुका इस्वीसन, विक्रमका संवत, शालीवाहनका शक, पारसीका सन, मुसलमानका सन, याहुदीका सन आदि चलता है परन्तु जैनोंका संवत प्रचलित नहीं था जो १९-२० वर्षसे कहीं २ चालु हुआ है परन्तु अभी तक सर्वत्र प्रचार नहीं है यह खेदजनक समझा है। सब संवतोंमें हमारा संवत पुराना है। हमारा वीर निर्वाण संवत २४४९ पूर्ण होकर अब २४५० का वर्ष कार्तिक सुदी १से प्रारंभ होगा। संवत की इतनी संख्या किसी मजहबकी नहीं है यह लिखते हुए हमें आनंद होता है, परन्तु साथमें दुःख भी होता है कि हमारे बहुतसे जैनी भाई अबतक अपने कारोबारमें जैन संवत नहीं लिखते। हमारा यह संवत लिखते रहनेसे तो हमें स्मरण रहता है कि हमारे अंतिम तीर्थंकर महावीर प्रभुको हुए इतने वर्ष होगये हैं तथा हमारे जैन संवतके प्रचारसे अन्य धर्मोंके साथ हमारा गौरव भी बढता है व जो जैनियोंको आधुनिक मानते हैं उनकी भी आंख खुलेगी कि जैनियोंके तो २४ पैगम्बर होगये हैं उनमें २४ वेंको हुए २४५० वर्ष हुए हैं इससे जैनधर्म बहुत प्राचीन धर्म होना चाहिये आदि। इससे हम हरएक जैन भाइसे सविनय वार २ निवेदन करते हैं कि आप अबके कार्तिक सुदी १से अपनी बहियोंमें, चिट्ठी पत्रीमें तथा हरएक व्यवहारमें वीर संवत २४५० अवश्य लिखिये। आपको लिखनेमें भूल पड़े तो वीर सं० २४५०के साथ विक्रम सं० १९८० भी लिखते रहेंगे तो कोई हानि नहीं है परन्तु जैन संवतका तो अवश्य उपयोग करना चाहिये।

* * *

वर्षांत। 'दिगंबर जैन'का १६ वें वर्षका यह अंतिम अंक है और आगामी कार्तिक माससे यह पत्र १६ वर्ष पूर्ण करके १७ वें वर्षमें प्रवेश करेगा। हमसे जितनी बनसकी इतनी साहित्य, समाचारादि द्वारा हमने इस वर्षमें ग्राहकोंकी सेवा की है व नवीन वर्षमें विशेष सेवा करनेकी उम्मेद है।

"दिगंबर जैन"के १४ वे व १५ वें वर्षके उपहार ग्रन्थ न हम प्रकट करसके थे न बहुतसे

ग्राहकोंका मूल्य भी हम वसूल कर सकेथे इसका हमें खेद है परंतु अब हर्ष है कि इन दो वर्षोंके तीन उपहार ग्रन्थ—जैन इतिहास प्र० भाग, श्रावक प्रतिक्रमण व बालबोध जैन धर्म तैयार होकर प्रकट होचुके व सब ग्राहकोंको वी० पी० से भेजे जाचुके हैं। वीर सं० २४४७–२४४८ इन दो वर्षोंके सभी अंक जब सब ग्राहकोंको पहुंच चुके हैं तब किसीको भी वी० पी० लेनेमें इन्कार न होना चाहिये तो भी कितनेक ग्राहकोंने वी० पी० वापिस की है यह उनको योग्य नहीं है। जब पूरा २ लाभ मिल चुका है तब मूल्य दे देना चाहिये। आशा है कि जिन्होंने वी० पी० वापिस की है वे फिरसे वी० पी० मंगावेंगे अथवा मनिओर्डरसे ३।।=) भेज देंगे।

चालू वर्ष वीर सं० २४४९का मूल्य तो प्रायः सभी ग्राहकोंसे लेनेका ही है और वह इसलिये वसूल नहीं किया है कि इसका उपहार ग्रन्थ तैयार होनेका है। यह वर्ष भी खतम हुआ है और नवीन वर्ष आगामी माससे प्रारंभ होगा इसलिये हमने ऐसा निश्चय किया है कि इस वर्षका व आगामी वर्षका इस प्रकार फिर दो वर्षोंका मूल्य भी हम आगमी वर्षमें एक साथ वी० पी० से वसूल कर लेंगे जिससे ग्राहकोंको मनिओर्डर व रजिस्ट्री फीसके चार आने बच जायंगे। वीर सं० २४४९ (वर्ष १६)का उपहार ग्रन्थ "नीतिवाक्यमाला" जो दुनियाके विद्वानोंका वचनामृतका पिटारा है छप रहा है और १००–१२५ पृष्ठोंमें तैयार होगा तथा वीरसं० २४५० के लिये भी एक बड़ा धार्मिक ग्रन्थ नवीन (पृ० करीब २००) उपहारके लिये हम तैयार कररहे हैं अर्थात २४४९–५०के दो उपहार ग्रन्थ तैयार होनेपर इन दो वर्षोंका मूल्य वी० पी०से वसूल किया जायगा। जिनको मनियोर्डरसे मूल्य भेजना हो वे खुशीसे भेज सकते हैं। २४५० में जिनको दिगम्बर जैन न मगाना हो वे २४४९ का मूल्य भेजदें व हमें पत्रद्वारा सूचना दें। उनको २४४९ का उपहार ग्रंथ अवश्य दिया जायगा।

* * *

सचित्र खास अंक।

हम १०–१२ वर्षोंसे प्रतिवर्षके प्रारम्भमें दिगम्बर जैनका सचित्र खास अंक प्रकट करते हैं इसी प्रकार २४५० में भी सचित्र खास अंक प्रकट करनेका हमने निश्चय किया है। इसबारके खास अंकमें कमसेकम १०–१५ चित्र प्रकट होंगे व करीब १०० पृष्ठका प्रकट होगा। इसमें एक **राष्ट्रीय रंगीन चित्र** तो ऐसा प्रकट होगा कि जो जैनियोंको नवीन मालूम पड़ेगा व देशसेवाके लिये हम भी आगे आ सकेंगे। इस अंकमें नागपुर झंडा सत्याग्रहमें बलि हुए कई जैनवीरोंका सचित्र परिचय देनेका हम प्रबन्ध कररहे हैं तथा इसके लिये ऐतिहासिक, धार्मिक, व्यवहारिक लेखोंकी भी हमें आवश्यकता है। खास करके हिन्दी व गुजराती भाषामें अंक प्रकट होगा परन्तु दूसरी दो चार भाषाओंके लेख भी एक २ दो २ रहेंगे। जहांतक हो हम यह जल्दी ही एक माहके भीतर २ प्रकट करेंगे इसलिये लेख व चित्र भेजनेवाले हमें अपने

लेख व चित्र ८ दिनके भीतर १ भेज देवे। जेल जाकर आनेवाले जितने भी जैन वीरोंके चित्र हमें मिलेंगे प्रकट करनेकी कोशिश की जायगी।

*　　*　　*

जैन तिथि-दर्पण।

हम १४ वर्षसे सचित्र जैन तिथि दर्पण तैयार करके ग्राहकोंको भेंट बांटते हैं इस प्रकार २४५० का जैन तिथि-दर्पण प्रथम ही तैयार करके इस अंकके साथ इसलिये बांट दिया है कि सब भाई इसका कार्तिक सुदी १से उपयोग कर सकें (क्योंकि खास अंक तो देरसे प्रकट होगा) इस वारके तिथिदर्पणमें हमने बहुत कोशिश करके परम तीर्थभक्त **स्वर्गीय ला० जम्बूप्रसादजी सहारनपुर**का चित्र प्रकट किया है जो पाठकोंको नित्य दर्शनीय होगा। लालाजीका परिचय व दूसरा चित्र खास अंकमें भी प्रकट करेंगे।

*　　*　　*

મુંબાઇ ગુજરાતમાં પ્રાંતિક સભાની જરૂર.

આપણી મુંબાઇ દિ૦ જૈન પ્રાંતિક સભાનું અધિવેશન ત્રણ ચાર વર્ષથી ગુજરાતમાં થયું નથી. વળી ગયા વૈશાખ માસમાં નાંદગાંવમાં જે રૂપમાં અધિવેશન થયું હતું તેથી આડધા ઉપર મેમ્બરો નારાજ છે, ને સભામાં ફાટફૂટ પડી છે, ને તેનો નીકાલ આવતોજ નથી. વાત એટલે સુધી આવી છે કે ઉપસભાપતિ સેઠ તારાચંદજીની આજ્ઞા મહામંત્રી બાબૂ માણેકચંદજી બૈનાડા માનતા નથી ને મનમાની કાર્યવાઇ કરી રહ્યા છે. હમણાંજ અમોએ મુંબાઇ જઇ સમાધાની માટે પં૦ ધન્નાલાલજી વગેરે સાથે પ્રયાસ કર્યો હતો પણ ખેદ સાથે લખવું પડે છે કે બીજી પાર્ટીના કર્ણધાર પં૦ ધન્નાલાલજી જરાપણ નમતું મુકવાને તૈયાર નથી ને એમની હઠ ભારે છે. નાંદગાંવની સભા ને ઠરાવ નિયમિત કે અનિયમિતની તકરાર છે તેથી અમે કહ્યું કે નવી ને જુની બંને કમેટી બોલાવો ને જે નીવેડો આવે તે કબૂલ કરવો અથવા સભાના બધા મેમ્બરોની મીટીંગ બોલાવવી ને તેમાં જે નિર્ણય થાય તે કબૂલ કરવો આ વાત થતાં પંડિતજીએ કહ્યું કે એ તો બોલાવાયજ નહીં પણ બધા મેમ્બરોની બોલાવે કોણ! અમે કહ્યું કે સભાપતિ બોલાવે ત્યારે પંડિતજી કહે કે એમ નહીં બને. એનો પ્રસ્તાવ નવી કમેટીમાં નીકળે ને તેમાં પાસ થાય તોજ પછી બોલાવાય. આનો અર્થ એજ કે પંડિતજી તો નવી કમેટી માન્ય કરીનેજ કામ કરવા માંગે છે, જે નાંદગાંવની સભા અનિયમિત માનવાવાળાને જરાએ કબૂલ નથી. આથી કંઇ નીવેડો ન આવવાથી 'જૈનમિત્ર' નું કાર્ય જેમ બ્ર૦ શીતલપ્રસાદજીના સંપાદન અને અમારા પ્રકાશન દ્વારા ચાલે છે તેમજ ચલુ રાખવાને શેઠ તારાચંદજી (ઉપસભાપતિ) નો આદેશ થયો છે, જેથી 'જૈનમિત્ર' તો બંધ ન પડતાં છે તેમ હાલ ચાલુ રહેશે છતાં પણ આ ઝઘડાનો નીકાલ શેઠ તારાચંદજીએ કોઇપણ રીતે લાવવાની જરૂર છે. અને તે નીકાલ એજ રીતે થઇ શકે કે મુંબાઇ દિ૦ જૈન પ્રાંતિક સભાના બધા સભાસદોની એક મીટિંગ ખુદ શેઠ તારાચંદજીએ ઉપસભાપતિ તરીકે બોલાવવી અને તેમાં માત્ર નાંદગાંવ સભાના અધિવેશન સંબંધી નીકાલ કરાવવો. આવી સભા મુંબાઇ, સુરત, વડોદરા, પાવાગઢ કે ગુજરાતમાં કોઇ સ્થળે બોલાવવી જોઇએ. સૌથી સરસ સમય મુંબાઇમાં માગશર માસમાં રથોત્સવ પ્રસંગે તથા પાવાગઢમાં મહા માસમાં મેળા પ્રસંગે છે. આશા છે કે શેઠ તારાચંદજી આ બાબત લક્ષ આપશેજ અને પ્રાંતિક સભામાં જે ભંગાણ પડ્યું છે તેને બચાવી લેશે.

रतलाम बोर्डिंगका उत्सव !

शेठ मा. पा. दि. जैन बोर्डिंग हाउस रतलाम-का १२वां वार्षिकोत्सव ता. २५—२६ अक्टूबरको रतलाम स्टेटके दिवान सा० पं. बृजमोहननाथजी जुत्सीके सभापतित्वमें होगया जिसमें बम्बईसे शेठ ठाकोरदास, शेठ रतनचंद, शेठ लल्लुभाई लक्ष्मीचंदजी, मि. मूले इन्सपेक्टर जुबिलीबाग ट्रस्ट फंड और वर्णी दीपचंदजी, कुंवर दिग्विजय-सिंहजी तथा पं० छोटेलालजी परवार आदि महानुभाव भी पधारे थे। ता. २५की रात्रिको शेठ गेबीलालजी महात्माके सभापतित्वमें "जैन धर्म ही सार्व धर्म है" इस विषय पर वर्णी दीपचंदजी, कुंवर दिग्विजयसिंहजी और पंडित छोटेलालजीके महत्व पूर्ण व्याख्यान हुये थे व ता. २६को प्रातःकाल ८ बजे रतलाम स्टेटके दिवान सा० सभापतित्वमें उत्सव हुआ जिसमें स्टेटके बड़े २ अधिकारी तथा प्रतिष्ठित शेठ साहूकार भी पधारे थे। विद्यार्थिओंके द्वारा मंगलाचरण होनेके पश्चात् झवेरी शेठ ठाकोरदास पानाचंदजीके प्रस्ताव करने पर दिवान सा० ने अपना आसन सुशोभित किया था। बाद बोर्डिंग हाउसके छात्रोंने तथा शहरकी जैन बालिकाओंने मधुर स्वरसे आपका स्वागत किया। फिर बो-र्डिंगकी रिपोर्ट चौकसी लल्लुभाईकी आज्ञानुसार पं० छोटेलालजी परवारने सुनाई, बाद मूले महोदय, वर्णी दीपचंदजी, कुंवर दिग्विजयसिंहजी और पं० छोटेलालजीके प्रभावशाली भाषण "शिक्षा" पर हुये। अंतमें सभापति महोदयने अपनी मधुरध्वनिमें सब व्याख्यानदाताओंके सार कह सुनाये थे और साथमें यह भी कहा कि इस बोर्डिंग हाउसकी बुनियाद बहुत मजबूत है। यह सब बोर्डिंग जैसे राजपूत तथा ब्राह्मण बोर्डिंगोंके मकान प्रबन्ध दि विषयोंमें उत्तम है और उक्त बोर्डिंगोंसे प्रथम बोर्डिंग यही है। इसको देखकर दूसरे बोर्डिंग हाउस खुले हैं। बोर्डिंग स्थापनाके प्रथम शेठ माणिकचंदजीने मेरे साथ इस बाबत गुफ्तगू की थी। मैंने भी उन्हें सम्पूर्णतया सलाह दी थी और मदद देनेका भी वचन दिया था। पीछे श्रीजी हजूरके कर-कमलोंसे यह खोला गया। इसने गत १२ वर्षमें बहुत तरक्की की है। इससे दूर२के बालकोंको विद्यालाभ हुआ है। ध्रौव्य फण्डसे निजी मकान हो गया है यह भी इसके लिये सौभाग्यकी बात है। विशेष तो यह मन्दिरके सामने बसा हुआहै जिससे कि विद्यार्थियोंके हृदयमें परमेश्वर का भय बना रहे क्योंकि Fear of God is the beginning of knowledge. इसमें व्यायामशाला भी है परन्तु इसकी अवस्था कुछ सुधार दी जाय तो यह विद्यार्थिओंके लिये अत्यंत लाभदायक होगा। व्यायामके साथ विद्यार्थि-ओंको समयानुसार कार्य्य करनेकी टेव पड़ना चाहिये। साथमें उन्हें सफाईपर विशेष लक्ष्य देना चाहिये। प्रायः देखा जाता है कि लोग दांत बराबर साफ नहीं करते किन्तु मैं अनेक अमेरिकन डाक्टरोंकी सम्मतिसे कहता हूं कि दांतकी गन्दगीसे ९० टका बिमारियां होती हैं। दांत साफ रहनेसे आंखकी रोशनी और पाचन शक्ति बढ़ती है। शरीर स्वस्थ और फूर्तिला रहता है इसलिये सुप्रिटेन्डेन्टको इस बतार

पूर्ण ध्यान देना चाहिये । हमें हरेक बातमें विदेशोंकी नकल नहीं करना चाहिये । जापान आदिकी सभ्यता हमारी सभ्यतासे बिल्कुल निराली है वहांकी आबहवा दूसरी और हमारे यहांकी दूसरी । हमें तो अपने यहांकी हालतोंके अनुसार सभ्यता और व्यौहार रखना चाहिये । विद्यार्थिओंको अपने लक्ष्यपर ध्यान देना चाहिये और पोलिटिकल मामलोंमें नहीं पड़ना चाहिये इससे ध्येयच्युत होजाते हैं । यहां तुम्हारी तो क्या किन्तु पोलिटीकल मामलोंमें बड़े २ विद्वान शास्त्रीजी सरीखे गोता खा जाते हैं । एक मेरे दोस्त जो अलाहाबाद युनिवर्सिटी के L.L.B. के परीक्षक थे उन्होंने लड़कोंसे एक प्रश्न यह पूछा था कि Constitutional Government किसको कहते हैं उसमें अनेक लड़कोंने Constitutionals को ही नहीं समझा था । संस्थाओंके संचालकोंका चरित्र विद्यार्थिओंके लिये आदर्श रहना चाहिये । उसकी छात्रोंपर बहुत बड़ी छाप पडती है । सब कामकी सिद्धि उन्होंने सिर्फ ज्ञानसे बताई थी । पश्चात् अनेक महत्व पूर्ण बातें कहकर अंतमें बोर्डिंगहाउसके मुख्य संस्थापक दानवीर शेठ माणिकचंदजीको धन्यवाद देकर वर्तमान संचालक झवेरी शेठ ठाकोरदास पानाचंदजी, मंत्री ललुभाई लखमीचंद चौकसी, स्थानीय कमेटीके सभापति शेठ कस्तुरचंदजी, मंत्री धनराजजी और सुप्रिन्टेन्डेन्ट वीर कालुरामजी परवार जिन्होंने गत १२ वर्षसे इस संस्थाकी उत्तम रीतिसे सेवा बजाई है, धन्यवाद दिया । पानसुपारीके पश्चात उत्सव करीब ११ बजे सानंद समाप्त हुआ, उसी दिन रात्रिको बोर्डिंगमें रहनेवाले लड़कोंकी "कर्त्तव्य निर्धारिणी अमलकारिणी" समितिका वार्षिकोत्सव शेठ कस्तुरचंदजीके सभापतित्वमें हुआ । मंत्रीके रिपोर्ट सुनाने पर विद्यार्थी केशरीमल बंडी, चांदमल गांधी और राजमल तथा वर्णी दीपचंदजी, कुँवर दिग्विजयसिंहजी व मुझेके शिक्षा पूर्ण व्याख्यान हुये थे । शेठ ठाकुरदास पानाचंदकी ओरसे रुपये १०) और वर्णी दीपचंदजीकी तरफसे रुपये ३) विद्यार्थिओंके उत्तेजनार्थ खास काम करनेवाले छात्रोंको वितरण किये गये थे ।

सम्मेदशिखरजी–इंजक्शन केस हजारीबागमें ता. १ डिसम्बरसे खुलेगा जिसमें अपनी तरफसे मदरास प्रान्तके दो तीन गवाहोंकी जुबानी ली जायगी ।

आबूजी तीर्थ–जीर्णोद्धारके लिये गुजरातसे मुनीम हजारीलालको १५०७।।।) की अच्छी सहायता मिली है ।

सागवाडा–में मुनि शांतिसागरजीका केशलोंच ता. २१ अक्टूबरको होनेवाला था ।

पावापुरी–में दीवालीमें महावीर निर्वाण उत्सवका सालाना मेला होगा ।

जिंतुर–में श्रावण सुदी ९ को नेमिप्रभुकी जयंतीका उत्सव हुआ था ।

वर्धामें–इस मासमें सेतवाल जैन परिषद्, विद्यार्थी परिषद्, जैन बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव, विशालकीर्ति पाठशालाका उत्सव आदिके अनेक उत्सव हुए थे । इसमें नागपुर सत्याग्रहमें जेल जानेवाले सेठ चिरंजीलालजी बड़जात्या आदि जैन वीरोंका स्वागत किया गया था ।

जैन समाचारवलि।

उदयपुरमें अतिशय-पं० भंवरलाल जैन विशारद उदयपुरसे प्रकट करते हैं कि वहांके जैन अग्रवाल मंदिरके ध्वजादंडसे ता० १६-९-२३ से दश दिन (दशलाक्षणीके) तक चंदनमिश्रित जलकी बूंदे निकलती रहीं थीं। इसकी खोज उदयपुर सरकारसे भी हुई थी। हमारे अनुमानसे यह देवकृत अतिशय है। क्योंकि उसमें ऐसा कोई कारण नहीं मालूम पडता जिससे संभव हो कि वर्षाऋतुका व दूसरा पानी हो।

जैन वीर-नामक पाक्षिक पत्र भारत दि० जैन परिषदकी ओरसे बिजनौरसे ब्र० शीतलप्रसादजी व बाबू कामताप्रसादजी द्वारा संपादित होकर प्रगट करनेकी तैयारी हो रही है। बहुत करके कार्तिक सुदीसे प्रकट होगा।

बंगाल आसाम-प्रा० खंडेलवाल सभाका वार्षिकोत्सव कार्तिक सुदी १५ को होगा।

कचनेरजी-में कार्तिक सुदी १५ को वार्षिक मेला होगा।

विना मूल्य-जहां २ शास्त्र भंडारोंमें **इष्टोपदेश टीका ग्रन्थ** जिसकी सरल वचनिका पूज्य ब्र० सीतलप्रसादजीने लखनऊमें चातुर्मासमें ठहरकर अतीव परिश्रमसे बनाई है, न पहोंचा हो वे डाक व्यय =)॥ भेजकर शीघ्र-ही हमसे मुफ्त मगालें।

ला० बरातीलाल जैन, यहियागंज, लखनऊ।

फलटण-(सतारा)के महाराजाने अपने तावेके ८४ गांवोंमें दशहरा पर होता हुआ पशुवध बंद किया है।

काशीपुर-में बालसुंदरी देवी की बलि भी बंद होगई है।

कुंथलगिरि-ब्र० आश्रमको सेठ कस्तूरचंदजी परंडावालोंने १००१)का दान किया है।

श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ-का केस जो १५ वर्षसे चल रहा था उसकी अपीलका चुकादा नागपुरकी हाईकोर्टसे ता. १ अक्टूबरको हुवा है कि मंदिरका इंतजाम श्वेतांबरी करें तथा वे मूर्तिके उपर लेप कछोटा कारमोटा लंगोटा आदि बना सकेंगे। दिगम्बरी चक्षु हटाकर पूजन कर सकेंगे। अपनी ओरसे इसकी अपील प्रिवीकौंसिलमें होनेवाली है।

देश-सेवकका स्वागत-बिजनोरमें ला. नेमिशरणजी जैन वकील देश-सेवामें भाग लेनेपर एक वर्षकी सख्त कैदमें जेल गये थे। वे छूट आने पर ता० १७ सितम्बरको आपका बिजनोरमें अपूर्व स्वागत हुआ व आपको ८ मानपत्र दिये गये थे जिनमें एक मानपत्र जैनोंका भी था। आपकी देशसेवा अपूर्व है। आपका चित्र हमने मंगाया है जो आगामी खास अंकमें परिचय सहित प्रकट होगा।

दोहद-में सेठ माणिकचंद जुबिलीबाग ट्रष्ट फंडके उपदेशक ब्र० दिग्विजयसिंहजीके पधारनेसे शास्त्र व आप सभा द्वारा जैन धर्मकी बड़ी प्रभावना हुई व ब्रह्मचारीजीको दोहद समाजकी ओरसे 'वक्तृत्वकलासुधानिधि'का पद दिया गया है।

सर सेठजीकी वर्षगांठका उत्सव—दा० रा० ब० सर सेठ हुकमचंदजीकी ६० वीं वर्षगांठका उत्सव इन्दौर राज्यके प्रधानके सभापतित्वमें जवरीबागमें आश्विन सुदी ३को समारोहसे हुआ था। सभा मंडपकी शोभा अपूर्व थी। पूजन, तीन भाषाओंमें संवाद, व्याख्यान आदि होकर सेठजीका भी व्याख्यान हुआ व विद्यार्थियोंको ३४९) का पारितोषिक बांटा गया। अंतमें व्यायामके खेल व औद्योगिक प्रदर्शनी भी हुई थी। साथमें कंचनबाई श्राविकाश्रमका उत्सव भी सौ० रत्नप्रभादेवीके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें भी स्त्रियोंके अनेक व्याख्यान हुए थे। व इनाम बांटा गया था। शामको सब दि० जैनियोंको प्रीतिभोजन दिया गया था।

विहार उडीसा—प्रा० दि० जैन खंडेलवाल सभाका उत्सव हजारीबागमें कार्तिक सुदी ७-८ को सेठ तनसुखलालजी पांड्याके सभापतित्वमें होगा।

उदयपुर—में पार्श्वनाथ विद्यालयका वार्षिकोत्सव पौष सुदी १२-१३-१४ को होगा।

सिद्धवरकूट—में भी कार्तिक सुदी ८ से म० वदी १ तक मेला होगा।

पानीपतमें—दशलाक्षणी पर्वमें पूज्य ब्र० सीतलप्रसादजीके उपदेशसे १३६०) का दानका चंदा हुआ था जो १२ संस्थाओंको भेजा गया है।

दहीगांव—अतिशयक्षेत्र जो नातेपुते(सोलापुर)के पास है वहां वार्षिक रथयात्राका मेला मगसिर वदी ६-७ को होगा। कई विद्वान व भजन मंडली पधारेंगी।

राणागिर—पर हरसिद्धि पर दशहराके दिन सैंकडों पशुओंका वध किया जाता था जो हमेशाके लिये बंद होगया।

भींड—में कन्याशालाकी स्थापना होगई।

उदेपुर—में दिगम्बर जैन धर्मशालाकी इसलिये जरूरत है कि केशरियाजीकी यात्रा जानेवालोंको वहां श्वेतांबरी व अन्य धर्मशालाओंमें ठहरना पडता है जहां बहुत कष्ट व अपमान सहन करना पडता है। हर्ष है कि अग्रवाल दि० जैन मंदिरके पीछे हमारी बहुतसी जमीन है उसपर धर्मशाला बनवानेका निश्चय हुआ है। एक २ कमरा तैयार करानेमें करीब ६००) खर्च होगा। यदि दानी महाशय एक २ कमरा बनवादेवें तो सहजमें दशबीस कमरे होजावेंगे। कमरेपर दानीका नाम अंकित किया जायगा। कमरेकी स्वीकारता भेजनेका पता इस प्रकार है। पं० रतनकुमार, मैनेजर अग्रवाल दि० जैन मंदिर, धानमंडी उदयपुर (मेवाड)

पानीपतमें—आश्विन सुदी ८ को २१ महाशयोंको यज्ञोपवीत संस्कार करानेका उत्सव ९ घंटे तक विधि सहित धूमधामसे हुआ था। सब विधि पं० फुलजारीलाल व पं० भीषमचंद शास्त्रीने कराई थी। व रा० ब० ला० लक्ष्मीचंदजी भी इस कार्यमें सामिल हुए थे। यज्ञोपवीत लेनेवालोंमें एक भाई ग्रेज्युएट भी हैं।

मुनि हुए—शांतिसागरजी महाराज जो ब्रह्मचारीसे क्षुल्लक हुए थे अब भादों सुदी १४ से निर्ग्रन्थ मुनि होगये हैं।

कटनी—जैन पाठशालाकी बोर्डिंगके लिये १५ छात्रोंकी आवश्यकता है। कमसे कम हिंदी चौथी कक्षा पास विद्यार्थी लिये जांयगे।

सुसनेर-में ब्र० छोटेलालके पधारनेसे अनेक प्रकारके सुधार हुये व पाठशालाकी व्यवस्था होगई ।

महावीर ब्र० आश्रम कारंजा-का पांचवां वार्षिकोत्सव सेठ हीरालाल कामदार बिजोलियाके सभापतित्वमें आश्विन सुदी १२ को बड़े भारी समारोहके साथ हुआ था। सुबह ६से ८ तक दौडनेकी शर्त, सर्कस जैसे व्यायामके अनेक प्रकारके खेल हुए जिसमें उत्तीर्ण विद्यार्थियोंको सोने चांदीके तमगे व २६) बक्षीस दिये गये। सारांश कि यहांकी बाहुबलि व्यायामशाला अतीव उत्तम व अनुकरणीय कार्य कर रही है जिसका सारा श्रेय व्यायामाध्यापक प्रो० श्री० अमीचंद शाहको है। शामको आश्रमका वार्षिकोत्सव हुआ था जिसमें श्री० चवरे वकीलने स्वागतका व्याख्यान किया, शामलाल दुलाभाव कावरीने रिपोर्ट पढ़ा फिर विद्यार्थियोंके अंग्रेजी संस्कृत व हिंदी संवाद हुए व अंतमें सभापतिका व्याख्यान हुआ जिसमें उन्होंने इस ब्र० आश्रमके कार्यकी बहुत प्रशंसा की व चवरे वकील व महाजन वकीलने सबका आभार माना व उत्सव समाप्त हुआ। उत्सवमें बहारसे बहुतसे भाई पधारे थे।

१० श्राविका चाहिये-बम्बईके रा० हा० श्राविकाश्रममें दश श्राविकाओंकी जगह खाली है। आनेवाली बाईयें शीघ्र ही पत्रव्यवहार करें क्योंकि दीवाली पीछे नया अभ्यासक्रम चालु होनेवाला है।

स० मंत्री, श्राविकाश्रम, तारदेव, मुम्बई।

जैन बोर्डिंग हाउस मेरठ-का १२ वां वार्षिकोत्सव कार्तिक सुद १-२ ता. ९-१० नवम्बरको ला० धर्मदास जैनकी धर्मशालामें होगा इसमें उत्तम २ व्याख्यान करनेवाले व उत्तम कविता पढनेवालेको रजतपदक दिये जावेंगे।

ऋषभदास वकील।

ઝેહેર-માં આસો સુદી ૮ ને દિને ૫ ભાઇઓએ વિધિ પૂર્વક યજ્ઞોપવિત ગ્રહણ કર્યું હતું જે પ્રસંગે ત્યાં પં૦ દીપચંદજી વર્ણી ખાસ પધાર્યા હતા. બ્ર૦ સુરેંદ્રકીર્તિજી તો ત્યાં છેજ.

અમદાવાદ-ની પ્રે૦ મો૦ દિ૦ જૈન બોર્ડિંગમાં રૂપાભાઇ સ્મારક વિદ્યાર્થી મંડળ તરફથી નાગપુર સત્યાગ્રહમાં જેલયાત્રા ભોગવી આવનાર શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી અંકલેશ્વરને ખાદી પર છાપેલું માનપત્ર અર્પણ કરવામાં આવ્યું હતું. માનપત્રના ઉત્તરમાં છોટાલાલભાઇએ જેલનો અનુભવ વર્ણવ્યો હતો અને કહ્યું હતું કે ત્યાં પણ જૈન ધર્મ પાળી શકાય છે.

આમોદ-માં પણ ભાઇ ઠાકોરલાલ હરજીવનદાસને જેલ જવા માટે તા૦ ૨૬ સપ્ટેંબરે માનપત્ર અપાયું હતું.

દાહોદ-માં દિ૦ જૈન પાઠશાળાનો વાર્ષિક મેળાવડો ભાદરવા સુદ ૧૦ ને દિને કોઠારી પનાલાલ દલીચંદજીના સભાપતિપણા નીચે થયો હતો. જ્યારે પં૦ દીપચંદજી વર્ણી, જેચંદ નાથજી વગેરેનાં વ્યાખ્યાનો થઇ ઇનામો વેંચાયા હતા.

સુરત-ની દિ૦ જૈન પાઠશાલાની વર્ષગાંઠ ભાદરવા વદી ૫ ને દિને ઉજવાઇ હતી, જ્યારે વિદ્યાર્થીઓના ગાયન, વ્યાખ્યાન, સંવાદ, કસરત, રાસ (કોરડો ગુંથવો) વગેરે થયાં હતાં.

લાકરોડા-માં કોઠારી ઉગરચંદ સાંકલચંદ દિ૦ જૈન પાઠશાળાનું નિરીક્ષણ પં૦ નંદનલાલજીએ કરી સંતોષ દર્શાવ્યો હતો. પાઠશાળાનું સ્થાયી ફંડ થવાની જરૂર છે. પુસ્તકો સાર્થ ભણાવવાં જોઇએ તથા ક્રમ પરીક્ષાલયનો રાખવો જોઇએ. પંચોનો પાઠશાળાપર પ્રેમ બહુ છે.

અંબાજીમાં જીવહિંસા બંધ-વાંકાનેર (ભીનેડા) ના શાહ પાનાચંદ ગુલાબચંદ ગડીઆ નવાવાસથી લખે છે કે "આસો સુદ ૮ ના રોજ હરસાલ અંબાજી (દાંતા) માં હજારો જીવોની હિંસા થતી તે હિંસા આ વર્ષે બંધ થઇ છે. દોઢસો બસો જીવ (બકરા) મારવા લાવેલા છોડાવી મુકયા છે અને દાંતા દરબારે ઢંઢેરો પીટાવ્યો હતો કે કોઇએ જીવ મારવો નહિ, મારશે તો ગુન્હેગાર થશે. એ વખતે સભા કરી સાકર વેચવામાં આવી હતી. તે દિવસે મારો મુકામ દાંતામાં હતો. સુદ ૭ ના રોજ અમે પ્રભુ પ્રત્યે મારાથી બનતી સ્તુતિ જીવ હિંસા બંધ થવા કરી હતી. ને પ્રતિજ્ઞા કરી હતી. કે આઠમના જીવો બચે અને જીવ હિંસા ન થાય તો ગોળ ખાઇશ નહીં તો ખાઇશ નહિ. કુદરત કૃપાએ એમ બન્યું કે ૫૦૦ શ્વેતાંબર જૈનો સુદ ૭ ના રોજ અંબાજી આવી પહોંચ્યા. અને પોતાની ગરદન નમાવી માતાના આગળ ઉભા રહ્યા. હમને ઝટકો મારો પણ જીવોને મારવા દઇશું નહિ. ને જો દેવીને ભોગ લેવો હશે તો લેશો. મુંગા જાનવરોને તેની હદમાં છોડી મુકો, તેવી કેટલી ટક્કર પકડી અને સરકારી અધિકારીઓ તથા ખુદ દરબાર તથા મહારાજ કુંવર વીગેરેના હાથ પકડી ઉભા રાખ્યા અને હથીઆર નીચાં મુકાવી બંધી કરાવી અને સભા કરી સાકર વેંચી જીવો છોડી મુકયા"

गोटीटोरिया-में शास्त्रसभा तीन दफे होती थी। इस साल मंदिरमें सभा वस्त्र देशी थे व सब भाई देशी वस्त्र ही पहन कर आते थे।

अकलतरा-में सिं० खूबचंद व बंशीलालने दशलाक्षणीका उद्यापन किया था जिसमें अन्य सामानके साथ मंदिरजीमें धोती दुपट्टे अछार आदि वस्त्र शुद्ध खादीके ही दिये थे।

बड़वानी-मे ब्र० गेबीलालजीके ठहरनेसे शास्त्रसभा, पूजनादिका अपूर्व आनंद रहा। तेरह द्वीप विधान भी हुआ तथा १५१) का चंदा संस्थाओंके लिये हुआ था।

पाढ़म-में जयकुमारजी, पं० जिनेश्वरदासजी, पं० सोनपालजी, बा० ज्योतिप्रसादजी आदिके अनेक व्याख्यान हुए थे।

कोन्नूर-में मुनि शांतिसागरजीके दर्शनार्थ श्री मगनबहिन, पं० बंशीधरजी, सेठ जीवराज गौतम आदि पधारे थे। वहां तत्वचर्चाका आनंद अपूर्व था। कईयोंने व्रत नियम लिये, गोकाकके एक जैनने ब्र० दीक्षा ली। फलटण, नीरा, लोनंद, सोलापुर, नातेपुतेसे भी बहुत भाई पधारे थे।

इस प्रकार वेहट, महेश्वर, राजनांदगांव, सिरोना, लखनऊ, होशंगाबाद, नागोर, कुंथलगिरि, तीजारा, मलकापुर, मारोठ, पपोरा, झांसी आदिसे भी यह पर्व सानंद मानेनेके समाचार मिले हैं।

आवश्यक्ता।

सचित्र खास अंकके लिये-दिगंबरके सचित्र खास अंकके लिये हिन्दी, गुजराती, मराठी, अंग्रेजी, संस्कृत लेख व कविताएं भेजनेवाले अपने २ लेखादि आठ दिनके भीतर २ भेज देवें।

संस्थाओंके अपकट चित्र व जेलयात्रा हो आनेवाले जैन वीरोंके चित्र व परिचयकी भी हमें तुर्त ही आवश्यता है।

सचित्र खास अंक १०-१५ चित्रों सहित (१०० पृष्ठका) एक माहमें प्रकट होगा।

मैनेजर, **दिगंबर जैन पुस्तकालय-सूरत।**

धूम्रपान निषेध।

(ले०-आर. टी. लाल जैन-फुलेरा)

प्रायः सभी जातिके मनुष्य किसी न किसी रूपमें धूम्रपान करते हैं। इस ही कारणसे हमारे भारतवासी दिन प्रतिदिन आलसी, पुरुषार्थ हीन एवं दरिद्री होते जारहे हैं। आजकलके नवयुवकोंका पहिला शौक बीड़ी (चुरुट) व सिगरेट पीना ही है। बिना सिगरेट व बीड़ीके पीये तो वह अपनेको जेंटलमैन (सभ्य पुरुष) ही नहीं समझते। यह सब ही मानते हैं कि तम्बाकू, बीड़ी, एवं सिगरेट इत्यादि मादक पदार्थ शरीरको किसी न किसी रूपमें हानिकारक है।

ग्रामीण मनुष्यों (देहातियों) में अधिकतर हुक्का पीनेका ही रिवाज (रस्म) है। यह प्रथा देहातियोंमें भी दिन प्रतिदिन तरक्की पाती जा रही है। यहांके बच्चे व बूढ़े सब ही हुक्का पीते हैं। इसलिये देहातों (छोटे छोटे गांवों)में इस प्रथाको रोकना अत्यावश्यक है।

धूम्रपानसे विवेकबुद्धि नष्ट होती है। और एक तरहसे यह मद्यसे भी खराब है। क्योंकि इसका असर पड़ा हुआ मालूम नहीं होता। यह ऐसी लत है कि जिसके एक दफा भी लग गई, बस फिर तो उसका छूटना ही दुःसाध्य होगया। इस लतसे मनुष्यके पल्ले खर्चेकी भी एक बड़ी भारी रकम बंध जाती है। इससे श्वास खराब होजाता है। मुंहमें दुर्गंध आने लगती है, दांत मैले होजाते हैं। मन मलीन होजाता है। हृदयसे दया उठ जाती है। यह एक बड़ी गंदी आदत है। महात्मा टॉल्सटॉय "लोग नशा क्यों करते हैं" शीर्षक लेखमें लिखते हैं किः—

"तम्बाकू पीनेवालोंका यही खयाल है कि इससे (तम्बाकूसे) चित्त प्रसन्न रहता है, दिमागको साफ करती है और यह शराबकी तरह विवेक बुद्धिको भी निकम्मी नहीं करती है। परन्तु तम्बाकू पीनेकी विशेष इच्छा जिस हालतमें होती है, उस हालतको जरा सावधानीसे देखिये, आपको विश्वास होगा कि शराबसे विवेकबुद्धि पर जो असर पहुंचता है वही असर तम्बाकूसे भी होता है। जब विवेक बुद्धि मारनेकी जरूरत पड़ती है, तब लोग जान बूझकर बेहोश होनेकी इस क्रियाको (तम्बाकूको) उपयोगमें लाते हैं। यदि तम्बाकू सिर्फ दिमाग साफ करती, या मन प्रसन्न करती तो मनुष्यको उसकी तरफ इतनी न सताती। लोग यह न कहते कि **"एक वार रोटी न मिले तो न सही, पर तम्बाकू विना काम नहीं चल सक्ता"**!

उस बावर्चीने जिसने अपनी मालकिनका खून किया था अपने इजहारमें कहा था कि "जब मैं अपनी मालकिनके सोनेके कमरेमें जाकर गलेमें छुरा भोंक दिया तब वह जमीनपर लेट गई। और उसके गलेसे खूनकी धार बह चली, बस मेरी हिम्मत जाती रही और उस समय मेरे हाथों उसका तमाम न हो सका। तब मैं फौरन दूसरे कमरेमें गया और वहां बड़ी देर बैठ मैंने एक सिगरेट पीयी। सिगरेट पीकर वह उस शयनागरमें पहुंचा और उसने वह काम पूरा कर डाला।

इस बातसे साफ जाहिर होता है कि उस मौकेपर जो तम्बाकू पीनेकी इच्छा उत्पन्न हुई थी, वह दिमाग साफ करने व आनंद पानेके लिये नहीं, किन्तु उस शक्तिको दबानेके लिये जो उस विचारे हुये कामको पूरा करनेसे उसे रोक रही थी।

बालक कब तम्बाकू पीते हैं? प्रायः तभी जब उनकी निर्दोष बाल्यावस्था समाप्त हो जाती है।

यह कैसी बात है कि मनुष्यमें जब कुछ नीतिमत्ता (ज्ञान) आती है तो वह तम्बाकू पीना छोड़ देता है। और बुरे फेलोंमें पड़ते ही वही फिर तम्बाकू पीने लगता है। प्रायः सब ही जुआरी तम्बाकू क्यों पीने लगते हैं? नियमित जीवन बितानेवाली स्त्रियें तम्बाकू क्यों नहीं पीती? क्यों वेश्यायें और पागल तम्बाकू पीते हैं? आदत तो है ही, किन्तु इसका असली कारण विवेक बुद्धि मारनेकी इच्छा ही है। इसी उद्देशसे यह पीयी जाती है और पीनेपर उद्देश तुरन्त पूर्ण हो भी जाता है।

प्रायः प्रत्येक तम्बाकू पीनेवाले मनुष्यकी हालत देखकर आप मालूम कर सक्ते हैं कि तम्बाकू विवेक-बुद्धिको कहां तक दबा सक्ता है। मनुष्य जबतक तम्बाकू नहीं पीता तबतक तो वह स्वयं भी समाजके आवश्यक नियमोंका पालन करता है। और चाहता है कि दूसरे भी वैसा ही करें। परन्तु जब वह तम्बाकू पीने लगता है तब उन नियमोंको भूलकर उनके विरुद्ध काम करने लगता है। साधारण लिखे पढ़े लोग भी तम्बाकू पीना बुरा। त्याज्य और अपने आनंदके लिये तम्बाकू पीकर दूसरेके स्वास्थ आराम और शान्तिमें विघ्न उत्पन्न करना मनुष्यत्वके विरुद्ध समझते हैं।

आजकल भारतवर्षमें तम्बाकू, बीडी, एवं सिगरेटका प्रचार बहुत जोरशोरसे है। और दिन प्रतिदिन इनके प्रचारार्थ नये नये कारखाने खुलते दिखाई दे रहे हैं। और हमारे भारतवासी भी इनको अपनानेमें कुछ कसर नहीं रखते।

अब वह समय नहीं रहा है कि हम इन मादक पदार्थों द्वारा हमारी विवेक बुद्धिको नष्टकर अपने मनुष्यत्वको खोवें। तथा अपने अमूल्य द्रव्यको पानीकी तरह बहा देवें। परन्च हमको वह काम करना है कि जिस कामको महात्मा गांधीने पूरा करनेका प्रण किया है।

प्यारे भारत सपूतो! कुछ समयके लिये अपने मौज, शौक, एवं आरामको भूल जाओ, और थोड़े समयके लिये महात्माजीके आदेशानुसार अपने सर्व गृह कार्य छोड़ देशसेवामें संलग्न होजाओ। यदि आपको किसी तरहकी तकलीफ एवं दुःख हो तो उसको सहनशीलतासे सहो। तथा कुछ समयके लिये महात्मा गांधीका साथ दे डालो।

आजहीसे आप लोग धूम्रपान करना छोडदें। और इसमें जो द्रव्य खर्च होता है उसे देशसेवामें लगाना शुरू करदें, और प्रण करलें कि आजसे हम धूम्रपान कभी नहीं करेंगे। इसीसे देशोन्नति होनेकी आशा की जा सक्ती है। देखिये, कवि रूपचंदजीने अपनी सुन्दर कवितामें इसका कितना निषेध कि

॥ लावनी ॥

धर्म भूल आचरण बिगाड़ा, इसका हेतु नहीं रहा इल्म्।
विवेक जाता रहा हियेसे, सबकी झूंठी पीये चिलम॥ १ ॥
प्रथम तम्बाकू महा अशुचि है, म्लेछ इसको बनाते हैं।
छूने योग्य नहीं बर कुलके, आने तोय लगाते हैं॥
ठंडी चिलममें धूम योगतें, जीव असंख्य बताते हैं।
पीते ही मर जांय सभी वह, जिन श्रुतीमें गाते हैं॥
होती इसमें अपार हिंसा, जरा दया नहीं आती गिलम्।
विवेक जाता रहा हियेसे, सबकी झूंटी पीये चिलम्॥ २ ॥
कौम रजीलोके साथ पीते हैं गई आबरू यह क्या बनी है?
हया दूर कर धर्म लजाते, उन्हींमें जानेकी मत सनी है॥
वह धर्म गांजा पीये पिलायें, उसीने बुद्धि यह तेरी हनी है।
स्वांस प्रगटकर बदन जलता, प्राण हरनेको यह हरफनी है॥
लगाना दमका बहुत बुरा है, पीते तनमें पडे खिलम्।
विवेक जाता रहा हियेसे, सबकी झूंठी पिये चिलम॥ ३ ॥
थावर त्रस करि सहित मरा जल, कुवारका यह निधान हुका।
सुतोय पड़ते सुजीव मरते, हैं पापका यह निधान हुक्का॥
रोग भिन्न होजाय कहें नर, पीते हैं हम यह जान हुक्का।
शुद्ध औषधि करो ग्रहण तुम, अशुचि जान करियो दूर हुक्का॥
सीख सुगुरुकी यही रूपचन्द, त्यागो जल्द मत करो विलम्॥
विवेक जाता रहा हियेसे सबकी झूंटी पीये चिलम॥ ४ ॥

और देखिये:—

॥ कविता ॥

जहरकी सास दुष्ट दुलही हलाहलकी।
बीछीकी बहिन पर पंचरूप साजी है॥
नानी करियारेकी धतूरेकी ममानी, पीतियानी।
बच्छनागकी जहानमें विराजी है॥
कहे गंगादत्त वह बचावे धन्य प्राणी।
ओ अफीमकी जिठानी बिष खोपरेकी आजी है॥
माहुरकी मौसी महतारी सींखियाकी।

यह तम्बाकू दई मारीको किने उपराजी है।
चित्तको भ्रमाय देत, मनको लुभाय लेत,
गुण को न देखे कछु खाये क्या भलाई है?
दशन विनाश करे मुखमें दुर्गंध रहे,
उष्णताकी बाधाने रक्तता सुखाई है॥
गर्दभके मूत्रवत जामन लगायकर,
कृषीकार बोय पुनि सब ही करित पाई है॥
धन्य है खवैयनको खाय जो तम्बाकूको,
सर्मा मांझ दूर होय पुचपुची लगाई है॥

और देखिये—पं० भूधरदासजीने इसका कैसे निषेध किया है—

॥ दोहा ॥

बंदो बीर जिनेश पद, कहों धर्म जगसार।
बरते पंचम कालमें, जग जीवन हितकार॥
ताहिन त्यागे धूमसों, सारे निज उर जान॥
देखो चतुर विचारके, तिन सम कौन अयान॥

॥ चोपाई (छन्द)

है जगमें पुरुषारथ चार, तिनमें धर्म पदारथ सार।
जाके सधे होय सब सिद्धि, या बिन प्रगटे एक न रिद्धि॥
सो पुनि दयारूप बिन कहो, करुणा बिन जिन धर्म न लहो।
यामें छहों कायकी घात, लई है कहां दयाकी बात॥
सो सब सुनो सबे बिरतंत, सुनके त्याग करो मतिवंत।
हरित कायकी उत्पत्ति हेय, अग्नि संयोग भूमि गनि लेय॥
अग्नि नीर है याको साज, इन बिन सरे नहीं यह काज।
काढत धूम बदनते जान, होय समीर कायकी हानि॥
इह बिध थावर दया न होय, त्रसकी त्रास होय पुनि सोय।
कुंथु आदि जीव या मांहीं, खेंचत स्वांस सबै मर जांहीं॥
उपजे जीव गुडाखु बीच, हुयी है तहां त्रसनकी मींच।
हिंसा होय महा अघ संच, ऐसे दया पले नहीं रंच॥
यही बात माने सब कोय, जंह हिंसा तहां धरम न होय।
बहुरि धरम नाश भयो जहां, सकल पदारथ बिनसे तहां॥
तातें निंद्य जान यह कर्म, पापमूल खोवे धन धर्म।

यामें कोई न देखे स्वाद, प्रातः होत ही आवे याद ॥
भव्य जीव सामायक करे, सब जीवन सों समता धरे।
यह जोरे सब याको साज, और सकल विसरे घर काज ॥
सेवे याही पुरुष उर अंध, यातें मुख आवे दुर्गंध।
उत्तम जीवनको नहीं काम, सिरगे हलकहोर उर स्याम ॥
जाको कोई ना आदरे, सो सब वस्तु यामें परे।
यातें सब पवित्रता जाय, परकी झूंठ गहे मन लाय ॥
यासों कछु पेट ना भरे, हाथ जर्द मुख कडुको करे।
गिने न या कर रैनि सवार, बुरो व्यसन है लेऊ विचार ॥

॥ दोहा ॥

स्वाद नहीं स्वार्थ नहीं, परमारथ नहीं होय।
क्यों झण्टे जग झूंठको, यही अचम्मो मोय ॥

॥ चोपाई (छंद) ॥

साधर्मी जन बैठे जहां, शोभे नहीं पुरुष वह तहां।
जिमि हंसनकी गोट मंझार, काग न शोभा लहे अपार ॥
यामें नफा नहीं तिल मान, प्रगट होत है सेल समान।
यह विवेक बुद्धि हिरदे धरो, ऐसी मान भूल मत करो ॥
इतनी बिनतीपे हठ गहे, मोह उदय त्याग नहीं कहे।
तासों मेरी कछुयन साय, लाठी लेय न मारो जाय ॥

॥ दोहा ॥

सरल चित्त सुन भेद यह, तजे आपसों आप।
हठ ग्राही हठ गहि रहें, जिनके पोता पाप ॥
हठी पुरुष प्रति यह वचन, सर्व अकारथ जांहि।
ज्यों कपूरको मेलिये, कूकरके मुखमांहि ॥
भूदरदास मनसों कही, यही यथारथ बात।
सुहित जान हृदय धरो, कोप करो मत भ्रात ॥
सबहीको हित सीख है, जाति भेद नहीं कोय।
अमृतपान जो कोई करे, ताहीको सुख होय ॥ इति ॥

पाठक! यदि आप लोग इसको ध्यानपूर्वक पढके मनन करेंगे, तथा मनुष्य मात्रको इसका "धूम्रपानका" हानि लाभ बतलावेंगे तो मैं आशा करता हूं कि भारतवर्ष शीघ्र उन्नतिके शिखर पै जा विराजेगा। अंतमें श्री महावीरस्वामीसे प्रार्थना करता हूं कि हे भगवान्! हमारे भारत सपूतोंको शीघ्र सुबुद्धि हो।

क्रोधका प्रताप।

(ले०-पं० चांदमल काला विशारद पचार)

क्रोधरूपी उग्र वैरी संयमभाव, सन्तोषभाव, निराकुलता नष्ट करनेमें अग्निके सदृश है। अर्थात् जिस तरह अग्नि अखिल वस्तुओंको एक क्षणमें तहस नहस कर डालती है, उसी तरह यह क्रोध भी सैकड़ों व सहस्रों वर्षोंसे उपार्जित की हुई पुण्य सामग्रीको एक क्षणमें नष्ट कर देता है। द्वादश वर्ष किया हुआ दीपायन मुनिका घोर तप एक क्षणमें क्रोधके प्रतापसे विलीन हो गया। सज्जनो! चिरकालसे उत्पन्न हुआ प्रेम इसी क्रोधरूपी पिशाचसे एक मिनिटमें नष्टत्वको प्राप्त हो जाता है। प्रिय वाचक वृन्द! क्रोधी मनुष्यसे समस्त लोक बैर-विरोध करने लग जाते हैं। प्रगाढ़ प्रेम करनेवाला मित्र भी दुश्मनी करना प्रारम्भ कर देता है। सज्जन पुरुष मुँहसे भी क्रोधी मनुष्यसे भाषण नहीं करते हैं। क्रोधी मनुष्यमें हिताहित व पुज्यापूज्य बुद्धि नहीं रहती। स्त्री, पुत्र, पिता, माता, मित्र वगैरह प्रिय बन्धुओंको यह क्रोधरूपी राक्षस मनुष्यके हृदयमें प्रविष्ट होकर मरवा डालता है। इसी क्रोधके प्रतापसे यह मनुष्य भूमृत व मंदिरसे कूप व कूपिकाओंमें गिरकर आत्म-हत्या कर बैठता है। क्रोधकी बजहसे धर्म भृष्टी दुराचारी निर्दयी असत्यभाषी ईर्षी घृणी असंतुष्टी होजाता है। कहा है कि दोषं न तं नृपतयो-रिपवोऽपि रुष्टाः कुर्वंति केसरि करींद्र महोरगा वा। धर्मं निहत्य भवकानन दावदहिं यं दोषमत्र विदधाति नरस्य रोषः। अर्थात् इस विशाल विश्वमंडलमें इस आत्माका जितना नुकसान क्रोध करता है, उतना न तो क्रोधित हुए राजा और शत्रु करते हैं। न हरि हस्ती और सर्पादिक ही कर सकते हैं क्योंकि ये तो अधिकसे अधिक यदि हानि कर सकते हैं तो एक भवमें केवल प्राणोंहीका घात कर सकते हैं पर यह क्रोध तो संसाररूपी काननको दग्ध करनेवाले धर्मका नाशकर जन्मजन्ममें अनेक तरहसे दुःखित करता है। तस्मात् प्रिय बन्धुओ! ऐसे क्रोधको सर्वथा छोड़ देना प्रत्येक जीवका कर्तव्य है। क्योंकि जबतक हृदय पटलमें यह क्रोध विराजमान है तबतक चाहे व्रत, यम, नियम, जप अनशनादिक तप कितने ही क्यों न करो किंतु ये सब क्षमाके अभावमें निरर्थक हैं।

प्रिय पाठकगण! इस विशाल भूमण्डलमें क्रोधके सदृश कोई प्रबल रिपु नहीं है। क्योंकि देहको धारण करनेवाला शत्रु तो अधिकसे अधिक गाली देना, मारना, प्राणोंका घात कर सक्ता है किंतु क्रोधरूपी शत्रु तो मित्रताका नाश कर देता है, दुर्बुद्धि उत्पन्न कर देता है, दुर्भाग्यको खींचकर पास ले आता है। प्राणोंसे प्यारी कीर्तिको नष्ट कर देना है। यद्यपि क्रोधका आधिपत्य प्रत्येक जीवके हृदयस्थानमें मौजूद है तथापि उसको परित्याग करके क्षमारूपी ऐश्वर्यको प्राप्त करना मनुष्य मात्रका उत्कृष्ट कर्त्तव्य है। क्योंकि देश, काल और क्षेत्रमें सर्वथा हितकारी क्षमाको धारण करनेसे जो फल प्राप्त होता है वह जीवोंको तीर्थयात्रा, जिन बिंबाभिषेक, जप, होम, दया, उपवास,

ध्यान, व्रत, अध्ययन, संयम, दान और पूजा करनेसे भी प्राप्त नहीं होता अतएव क्षमाको ग्रहण करना जीव मात्रका कर्तव्य है। मनुष्यका भूषण क्षमा ही है। क्षमावान् मर्त्यकी कीर्ति संपूर्ण पृथ्वीमंडलमें विस्तृत होजाती है। क्षमाधारी मनुष्यको प्रत्येक जीव प्रेमकी दृष्टिसे अवलोकन करते हैं। अतएव सज्जनों! इस क्रोध रूपी उग्र वैरीको अपने हृदयपटलसे हटाकर समस्त धर्मोंमें श्रेष्ठ मोक्षमार्गमें प्रवृत्त करानेवाली क्षमाको चिन्तामणी रत्न समझकर ग्रहण करनेमें संकोच मत करो।

श्री केसरीयाजी तीर्थनी आगाही.

(लेखक-नवनीतलाल चुनीलाल जरीवाला-मुंबई.)

घणा टुंक समय ऊपर श्री केशरीयाजी तीर्थनी यात्रा करवानो लखनारने लाभ मळ्यो हतो, अने त्यांना केटलाक दृश्यो तेमज स्थिति जोतां आ टुंक लखाण दिगम्बर जैन बन्धुओनी जाण माटे लखवानी फरज लागी. श्री केशरीयाजीनुं तीर्थ दीगंबर जैन कोमनो मोटो भाग जाणतुं हशे के ए तीर्थ पोतानी उत्पत्तिथी दिगम्बर आम्नायनुं हतुं, अने ते स्थिति लांबा समय सुधी चालु रही.

आ दहेरासरनो वहीवट पूज्य भट्टारकजीना हाथमां हतो, तेओए एक समये त्यांथी विहार कर्यो अने ते वखते श्री मंदिरजीनो सघळो कारभार पोताना भंडारीजी के जेओ एक ब्रह्मण हता तेओने सोंप्यो हतो. आ देखरेख बदल तेओने भंडारीजीए जे उपज थाय तेमांथी अमुक टका आपवानुं नक्की कर्युं हतुं. भट्टारकजीने विहारमां लगभग सातेक वर्ष वीती गया, अने ते अरसामां एक बीजो बनाव बन्यो. जे गाम (धुलेव)मां आ तीर्थ छे, ते गाम उदेपुर राज्यना हाथ नीचेना एक राउजना ताबामां हतुं, ते राजाने पोतानुं अमुक कार्य थाय एवी घणी उत्कंठा हती, अने आ मूर्ति उपर घणी आस्था हती, तेथी तेणे एवो निश्चय कर्यो के जो ते कार्य पोते इच्छा राखे छे ते प्रमाणे फळीभूत थाय तो आ दहेरासरजीने ते गाम के जे हदमां आ तीर्थ आव्युं छे, अने तेनी आसपासनी हद के जे सर्वेनी आवक हजारोनी हती, ते भेट करवी. दैव प्राबल्यथी ते कार्य फळीभूत थयुं, अने पोताना निश्चय प्रमाणे ते गाम तथा ते तालुकानी सघळी उपज तथा हक्को श्री मंदिरजीने भेट कर्या. आथी भंडारीजीना हाथमां सघळी राजद्वारी सत्ता आवी. आ सत्ताए तेमने मदांध कीधा, अने भट्टारकजीनी सत्ता तद्दन उथलावी काढवानां तेणे पगलां लीधां. ए अरसामां भट्टारकजी पाछा पधार्या, भंडारीजी पासे सघळो हीसाब मांग्यो. भंडारीजीए पुरतो खुलासो आप्यो नहिं. ए चर्चा लगभग बे वरस चाली, कांई पण निश्चय थयो नहिं अने ए समय श्री भट्टारकजीए काळ कर्यो. त्यार बाद भंडारीजीनी सत्तामां कोई दखल आपनार रह्युं नहिं, एटले दीवसे दिवसे वधु जुल्मी थवा लाग्या. आपणा दि० भाइओ ते जिल्लामां घणी साधारण हालतमां छे. अने आ प्रमाणे होवाथी तेमांना केटलाको आ भंडारीजीना राज्य बंधारणमां नोकरी हता,

तेमांनो मोटो भाग खेतीवाडीने लगता राज्यना काममां रोकाया हता. त्यार बाद एक वरसे भंडारीजीए एवो हुकम बहार पाडयो के पर्युषण पर्वमां पण ते लोकोए बळद विगेरे लइ जइ चलु दीवसो माफक काम करवुं. लोकोए आ नहिं करवा माटे अरज करी अने कह्युं के पर्युषण पर्व जेवा धार्मिक दिवसोमां अमो ते काम नहिं करीशुं. बीजी दरेक बाबतमां तमारो हुकम मानीये छीये, अने मानीशुं, पण आ बाबतमां तो धार्मिक बाध होवाथी हुकम नहिं पाळीशुं. भंडारीजीए जवाबमां जणाव्युं के जो तेमनो हुकम नहिं पाळवामां आवे तो जोरजुलमथी पळाववामां आवशे. आ उपरथी त्यांना लोकोए संप करी गाम छोड्युं, अने पासे आवेला Political Agent पासे फरीयाद लई गया. पोलिटिकल एजंटे भंडारीजीने संदेशो कहेवडाव्यो के रैयतने राजी राखीने राज थई शकशे. रैयतना उपर जुलम वर्तावी राज्य नहीं कराय, पण सत्ताना बळथी भंडारीजीए ते संदेशानी कांईपण दरकार करी नहिं. आ उपरथी पोलिटिकल एजंटे उदेपूर तार करी अतरेनी स्थिति जाहेर करी. अने साथे सलाह आपी के तुरतज तेनो कबजो लई लेवो. उदेपुर राज्ये तुरतज एक लश्कर मोकली कबजो ते गामनो लेवडाव्यो. आ बनाव १९३२नी साल लगभग थयो. अने त्यारथी ते अत्यार सुधी आज राज्यनी हकुमत चाले छे. भंडारीजीने तेनी सत्ता बदल श्रीकेसरीयाजीना भंडारनी उपजमांथी सेंकडे तेत्रीस टकानी उपज वंशपरम्परा माटे करी आपी. राज्यनी सत्तामां मंदिर आव्युं, ते दिवसेज त्यांना असल भंडारपर त्रण ताळां पडयां—एक राज्यनुं, बीजुं भंडारीजीनुं अने त्रीजुं जैनोनुं अने एक सांकल त्यांना रक्षक मीणोनुं. आ भंडार अत्यार सुधी आज स्थितिमां छे. अने १९४० लगभग उदेपुरना दीवान साहेब आ भंडारनी तपास लेवा आव्या हता, पण श्रीजीनो हुकम नहिं होवाथी जो के तेमने भंडारना बारणां खोलाव्यां, पण अंदर जई शक्या नहिं. राज्ये थोडा वखत बाद एक कमीटी नीमी जे आ मंदीरजीनी व्यवस्था चलाववा लागी. आ व्यवस्था दरम्यान दरेक वरसे मंदिरमां कांई अने कांई फेरफार थतां रह्यां, जेवा जेवा मुनीमजी आव्या, तेवा तेवा फेरफार थतां रह्यां. वैष्णवो आव्या तेणे वैष्णवोनी शास्त्र वांचवानी मंदिरजीनी वचमां बेठक तैयार करावी. अने त्यां श्रीमद् भागवत दररोज दश वाग्या पछी वंचाववानुं चालु कर्युं. भट्टारकजीनी गादी धीमे धीमे एक एक चीज ओछी करता काढी नांखी, अने अत्यारे आपणुं शास्त्र वांचवाने जग्या क्यां राखवी ते सवाल थई पडयो. श्वेतांबरी मुनीओ आव्या, तेमणे भगवानने आंगी वगेरे चढाववानो रीवाज चालु कराव्यो, अने सघळो श्वेतांबरी रीतभातो चालु थई गई. फक्त एक चक्षु चढववानुं बाकी राख्युं, ते पण ते दहेरासरना परताने लईने, नहिं तो ते चढाववानो प्रयास पण श्वेतांबरी समाज तरफथी थई गयो, पण तेमां पाछा पड्या अने ते वात मुलत्वी रही. आवी स्थीति जो वधु समय चालु रहे तो दिगंबरीओना सघळा बाकीना रहेला हको नाश पामे, अने छेवटे ज्यारे सघळा जागे त्यारे शिखरजी अने बीजा तीर्थोमां थयुं,ते प्रमाणे लाखो रुपीया खरची पोताना हकने माटे लढवुं पडे. दर वरसे

एक एक हक नाबुद थतो जाय छे. गये वरसे मंदिरजीनी उपरनो ध्वजादंड फेरववानो हतो, ते श्वेतांम्बरीओए चढाववानी तजवीज करी. एक संघ लगभग अनेक हजार माणसनो ते समयपर आवी पुग्यो, अने आ बधी गोठवण थई, पण दिगम्बर जैन समाजना सद्भाग्ये आपणा पूज्य क्षुल्लक श्री **देवसागर** त्यां हाजर होवाथी तेमना प्रतापे ते ध्वजानुं रक्षण थयुं छे. ते ध्वजा उपर दिगंबर आम्नायनो लेख छे, अने ते आपणा मत प्रमाणे चढाववामां आवे छे. आवी रीते अनेक हको नाबुद थयां. मुख्य दहेरासरनी आसपासनी भमतीमां पण केटलीक प्रतिमाजीओना लेखो घसी काढया छे, केटलाकने श्वेतांबरी लंगोटनुं चिन्ह करवामां पण बाकी नथी राख्युं. लखनार अत्यार सुधीमां चार पांच समय दर्शन करी आव्या छे, अने दरेक समय ऊपर कांई नवीनता मालुम पडती होवाथी अत्यंत खेद साथे ते जोई लेता, पण आ समये कांई पण आ कार्यमां सत्कार्य बनी शके एवुं लागवाथी आ लेख लख्यो छे.

लखनार हाल दर्शन करवा गया हता, ते समय त्यां देवसागर नामना एक क्षुल्लक श्री बिराजता हता. वात करतां मालुम पड्युं हतुं के तेमनी पासे अत्रना भट्टारकजी पासेना केटलाक लेखो तथा आ दहेरासर संबन्धी सघळी माहीति हाल मोजुद छे, अने तेमनो इरादो एवो हतो के दि० समाज तरफथी कांईपण आ बाबतमां पगलां लेवाय तो तेमां जे मदद जोइये ते सघळी पुरी पाडवा तेओ तैयार रहेशे. तेओ टुंक समयमां मुंबाई पधारनार छे. आ सघळा खुलाशाओ लई एक डेप्युटेशन आपणा अग्रगण्य नेताओनुं उदेपुर नरेश आगळ लई जवुं जोइए अने तेमने सघळी हकीकतथी वाकेफ करवा जोइये अने अरज करवी जोइयेके Managementमां आपणो मत रहे अने हालनी सघळी विगतनी नोंध लई आगळ उपर कांई पण फेरफार सर्वेनी संमति वगर थई न शके. जे थयुं होय ते तो थई गयुं, पण भविष्यमां कांइ नवीन न बनवा पामे एवो बंदोबस्त तो खास करावोज जोइए. उदेपुर नरेश आपणी व्याजबी मांगणी ऊपर ध्यान आप्या वगर रहेशेजनहिं. आटलुं थवाथी भविष्यनी प्रजा माटे आपणे निर्विघ्न मार्ग करी शकीशुं. आ कार्यमां कांईपण प्रमाद राखवामां आवे तो जरुर तेमां कांई अनिश्चित कार्य बनवा चोकस संभव छे. आ कार्य तीर्थक्षेत्र कमीटी तरफथी उपाडी लेवुं जोइये. आशा छे के आ नम्र अरजी जैन बन्धुओना हृदयमां उतरशे अने तेओ आ कार्यमां बनतो प्रयास करवा तत्पर थशे. अंतीम इच्छा एज के जैन समाज हवे वधु झगडाना कारणो नहिं उभा करी, जैन कोमनुं श्रेय करशे. एज.

बिल्कुल नया ग्रन्थ।

विद्यमान बीस तीर्थंकरकी २० पूजाएँ

स्वर्गीय कविवर थानसिंहजी टोंक निवासीकृत यह पूजा अभी ही बड़े २ टाइपोंमें चिकने कागज पर छपकर तैयार हुई है। पूजाके छंद बड़े ही मनोहर हैं। पृ. १८८ सजिल्द मूल्य सिर्फ १) अवश्य मंगा लीजिये।

मैनेजर, **दिगंबर जैन पुस्तकालय–सूरत**

प्रातः कर्म विचार.

(લેખક-મોહનલાલ મથુરાદાસ, કાણીસા).

(ગયા અંકથી ચાલુ)

ગુદાએ લાગેલો મલ હાથવતી ઉતારવો નહિ. તેમજ કોઇપણ જાતના ફૂળ કે કંદમૂળથી ઉતારવો નહિ. પરંતુ સુકાં કાષ્ટથી ઉતારવો. મળ ત્યાગ કરવા બેસતાં બોલવાનો મંત્ર—

ॐ ह्रीं अत्र क्षेत्रपाल क्षमस्व मां मनुजं जानीहि स्थाना दस्मात्प्रयाहि अर्हं पुरीषोत्सर्गं करोमीति स्वाहा ॥

પૂર્વ કે ઉત્તર તરફ મુખ રાખી મળમૂત્રનો ત્યાગ કરવા બેસવું. અનગળ જળથી ગુદા પ્રક્ષાલન કરવી નહિ.

જમણા હાથમાં પાણીનું વાસણ રાખી ડાબા હાથથી ગુદદ્વાર ધોવું. હાથ ધોઇ ફરી ગુદદ્વાર ધોવું. પછી તે સ્થાન છોડી જળાશય કે ઘર તરફ પ્રયાણ કરવું.

શુદ્ધિ.

શુદ્ધિ બે પ્રકારની છે. બાહ્ય શુદ્ધિ અને અંતરંગ શુદ્ધિ. માટી અને પાણીના યોગથી જે શુદ્ધિ થાય છે તે બાહ્ય શુદ્ધિ. આત્માના પરિણામથી અને મંત્ર દ્વારા જે શુદ્ધિ થાય છે તે અંતરંગ શુદ્ધિ.

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरं शुचिः ॥

એ મંત્રથી સ્નાન કરી નમોકાર મંત્રનું ધ્યાન કરવું.

બાહ્ય શુદ્ધિ

જળાશયે અગર ઘેર માટીના સાત ગોળા બનાવવા એટલે કે સાત ભાગ બનાવવા. પછી એક હાથથી બીજે હાથ એમ માટીને ફેરવી હાથ ધોઇ ફરી માટી લેવી, એવી રીતે ત્રણ ત્રણવાર ધોઇ હાથ સાફ કરવા. જળાશય હોય તો કેડ સુધી પાણીમાં જઇ પગ ધોવા અને ઘેર હોય તો ઢીંચણ સુધી પગ ધોવા.

બ્રાહ્મણને સફેદ, ક્ષત્રિયને લાલ, વૈશ્યને પીળી અને શુદ્રને કાળી માટી શ્રેયસ્કર છે.

ગૃહસ્થ શ્રાવકે નદી તીરની કે બેડી સાફ કરેલી જીવ જંતુ સિવાયની માટી લેવી.

ઉપર લખેલા પ્રકારની માટી જે દેશમાં જે પાત્ર ન મળે ત્યાં તેણે ત્યાં મળે તેવી માટીથી શુદ્ધિ કરવી.

ગૃહસ્થ શ્રાવકોએ હંમેશાં અંતર્બાહર શુદ્ધિ કરવા માટે પ્રયત્ન કરવો જોઇએ કેમકે અંતર્બાહર શુદ્ધિ એજ ગૃહસ્થપણાનું મુખ્ય સાધન છે. તેમજ શુદ્ધતા અને સદાચાર સિવાયના મનુષ્યની સર્વે ધાર્મિક ક્રિયાઓ નિષ્ફળ જાય છે.

પગને નીચેથી ઉપરથી ને બાજુથી માટી લગાવી ધોવા ને તેટલા દરેક વખત હાથ પણ ધોવા. ડાબો પગ પહેલો ને પછી જમણો પગ ધોવો.

પગ ધોવાનો મંત્ર.

ॐ नमोऽर्हते भगवते सुरेन्द्रमुकुटरत्नप्रभाप्रक्षालितपादपद्माय अर्हं मेवं शुद्धोदकेन पादप्रक्षालनं करोमि स्वाहा ॥

હાથ ધોવાનો મંત્ર

ॐ ह्रीं ह्रौं असु झुर असुझुर सुकुक भव तथा हस्तशुद्धिं करोमि स्वाहा ॥

ઉપર પ્રમાણે વિધિ થઇ રહ્યા પછી, જો જળાશયે હાથ પગ ધોયા હોય તો ત્યાં નહીં તો ઘર આગળ શુદ્ધ અને ગાળેલું પાણી એક લોટામાં ભરી તે લોટો બાજુ મુકી ઉત્તર કે પૂર્વ તરફ

મુખ કરી દાતણ કરવા બેસવું. દાતણ નીચે બતાવેલા પૈકીમાંથી લેવું, તે બાર આંગળ લાંબું ને ટચલી આંગળીના અગ્ર ભાગ જેટલું જાડું લેવું. બેસીને તરતજ બે વખત આચમન કરવું. ત્યાર બાદ દાતણ ચાવી દાંત જીભ સાફ કરવાં.

ઉત્તમ દાતણ.

ખદીર, કરંજ, કદંબ, ચિંચ, વેળું, લીમડો, અંધાડો, બેલ, કપાસ, આમળાં એ વૃક્ષનાં દાતણ ઉત્તમ સમજવાં. બીજ, પાંચમ, આઠમ, અગીઆરસ ચૌદશ તેમજ રવીવાર, વ્યતિપાત, સંક્રાંતિ દિવસ અને પોતાના જન્મ દિવસે અને વ્રતના દિવસોએ લીલા દાતણથી દંત ધાવન કરવું નહિ.

મુખ ધોવાનો મંત્ર.

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं मुखप्रक्षालनं करोमि स्वाहा ।
ॐ परमपवित्राय दन्तधावनं करोमि स्वाहा ॥

સૂર્યોદય થયા પહેલાં દાતણ કરવું નહિ. જે માણસ સૂર્યોદય થવાં પહેલાં દાતણ કરે છે, તે પાપી અને નિર્દય ગણાય છે. કોલસા, રેતી, ભસ્મ, નખ, વીટ, ઢેકાળો, પત્થર વિગેરેથી દાંત ઘસવા નહિ. त्रि. अ. २ श्लोक ७२

જે દિવસે લીલું દાતણ કરવાની ના કહી હોય તે દિવસે બાર લોટા પાણીથી દાંત અને મુખ ધોવું. તેથી શુદ્ધ થાય છે.

त्रि. अ. २ श्लोक ७४

દાતણ કરતી વખતે આંખો, નાક, કાન, નખ અને ખભો તથા કેડનો ભાગ પાણીથી સાફ કરવો.

જળાશયમાં થુંકવું નહિ તેમ મુખ પણ ધોવું નહિ. પરંતુ આપણે મુખ ધોએલું પાણી ફરીથી જળાશયમાં આવે નહિ, એવી રીતે લોટો ભરી જઇ દૂર મુખ ધોવું. દાતણ કર્યાં પછી રત્નત્રય મંત્રથી ત્રણ આચમન કરવાં.

સ્નાન વિધિ.

સ્નાન કરવાનો ઉદ્દેશ્ય વૈદક રીતે શરીર સ્વચ્છ બનાવવાનો છે. ત્યારે ધાર્મિક રીતે શરીર શુદ્ધ કરી તેના દ્વારા મન પણ નિર્મળ કરાવવાનો છે. મનુષ્ય માત્રે હમેશાં એક વખત ગરમ જળથી સ્નાન કરવું એમ વૈદકશાસ્ત્ર બતાવે છે. આપણા શાસ્ત્રોમાં પણ હમેશ પ્રાતઃકાળે સ્નાન કર્યા પછીજ દેવપૂજા, દાન, ઇત્યાદિ કરવાનું જણાવ્યું છે.

શરીર પર બીજા મનુષ્ય પાસે યા ગૃહિણી પાસે શુદ્ધ તેલ યા કોપરાનું તેલ ચોળાવવું. અને ત્યાર બાદ સ્નાન કરવું. તેલ બીજાની પાસે ચોળાવવા ત્રિવર્ણાચારમાં જણાવે છે કે—

पात्रदानं स्वहस्तेन परहस्तेन मर्दनम् ।
तिलकं गुरुहस्तेन मातृहस्तेन भोजनम् ॥

અર્થ—સત્પાત્રને દાન પોતાને હાથે કરવું, શરીરે તેલ ચોળવું તે બીજા પાસે ચોળાવવું. અને ગુરૂ પાસે તિલક કરાવવું. તેવીજ રીતે ભોજન માતાના હાથનું જમવું શ્રેષ્ઠ બતાવ્યું છે.

આઠમ, ચૌદશ, પાંચમ, રવીવાર અને વ્રતોના દિવસો ઉપરાંત જે દિવસે બ્રહ્મચર્ય પાળવાનું હોય તે દિવસે તેલ ચોળી સ્નાન કરવું નહિ. તેવીજ રીતે સ્નાન કરવાનો બીજો પ્રકાર બતાવ્યો છે કે-

સોમવારે તેલ ચોળી સ્નાન કરવાથી સત્કીર્તિ વધે છે.
મંગળવારે „ „ જલ્દી મૃત્યુ પામેછે.
બુધવારે „ „ સુવર્ણની પ્રાપ્તિ થાય
ગુરૂવારે તેલ ચોળી સ્નાન કરવાથી આયુષ્ય વધે છે.
શુક્રવારે „ „ દ્રવ્યનો નાશ થાય છે.
શનીવારે „ „ આયુષ્ય વધે છે.

પરંતુ વિવાહે, દ્રવ્ય મળે ત્યારે, સુતક ઉતારવું હોય ત્યારે, મિત્રનું કાર્ય સિદ્ધ થાય ત્યારે ગમે તેવારે સ્નાન કરવાથી દોષ લાગતો નથી. તેલ ચોળ્યા પછી જીવ જંતુ સિવાયની શુદ્ધ જગ્યાએ શ્રાવકે પ્રાસુક જળથી સ્નાન કરવું.

સ્નાન કરવા યોગ્ય પાણી.

જે પાણી પર્વત ઉપરથી પડતું હોય, સૂર્યના તાપથી તપેલું હોય, પશુના પગથી ડોળાતું હોય તેમજ નદીનું વહેતું પાણી પ્રાસુક માનેલું છે. તેવીજ રીતે રેતીના યંત્રમાં નાંખેલું, જેમાં ગંધકની વાસ હોય તે પાણી પ્રાસુક માનેલું છે. પણ ફક્ત સ્નાન કરવા પુરતુંજ, પીવા માટે નહિ.

જે દ્વિજ સતત સાત દિવસ સુધી સ્નાન કરતો નથી તે શુદ્રપણાને પામે છે. માટે હમેશાં

સ્નાન કરવું જોઇએ. કદાચ દૈવવશાત્ રવિવારે ન બને તો પણ બાકીના દિવસોએ તો અવશ્ય કરવું.

આ દેહ અનેક પ્રકારના મળથી ભરેલો છે. તેમજ તેમાંથી હમેશાં મળ વહેતોજ રહે છે. તેથી તે પ્રાતઃકાલે સ્નાન કરવાથીજ શુદ્ધ બને છે. જે મનુષ્ય પ્રાતઃકાલે સ્નાન કરવાને અસમર્થ હોય તેણે મધ્યાન્હ કાલે સ્નાન કરવું.

સ્નાન કરવાનું પાણી પોતે અગર પોતાની પત્નિ, શિષ્ય કે પુત્રે આણેલું હોવું જોઇએ.

નીચ અથવા હલકી જાતના મનુષ્ય પાસેથી પાણી લઇ નહાવું નહિ. તેમજ એક હાથે નહાવું નહિ.

બન્ને હાથ મેળવી ચોટલીને ગાંઠ વાળી નમોકાર મંત્રનું ધ્યાન કરી બે આચમન કરી પછી સ્નાન કરવું.

(સ્નાનની વધારે વીધી ફરી બીજી વખત લખીશ, કેમકે તે હાલની રૂઢિ વિરૂદ્ધ અને બહુજ લંબાણવાળી હોવાથી તેને માટે ખાસ પુસ્તક લખવા વિચાર છે.)

ઘેર સ્નાન કરવાનું હોય ત્યારે ઘર તરફ બેસી સ્નાન કરવું, બીજી જગ્યાએ સ્નાન કરવાનું હોય ત્યારે સૂર્ય તરફ બેસી સ્નાન કરવું, રાત્રે સ્નાન કરવાનુ હોય ત્યારે પૂર્વ કે ઉત્તર તરફ બેસી સ્નાન કરવું. સંધ્યા અને પૂજા કરતા પહેલાં સ્નાન અવશ્ય કરવું જોઇએ. તેમજ સંક્રાંતિ ગૃહણ હોય ત્યારે, ઉલટી થઇ હોય, ત્યારે મૈથુન કર્યા પછી, માંસનો સ્પર્શ થયો હોય ત્યારે, સુતક સમાપ્તી વખતે, રોગ ગયા પછી સ્મશાનમાં જઇ આવ્યા પછી ખોટું સ્વપ્ન આવે તો, કોઇ મુનિ મરણ પામે ત્યારે અવશ્ય સ્નાન કરવું જોઇએ.

જીભ અને દાંત સારી રીતે ઘસવાનો મહાવરો રાખવો જોઈએ. સ્નાન થઇ રહ્યા પછીજ સંધ્યા પૂજા જપ તપ કરવાં નહિ.

ઉપર પ્રમાણે સ્નાન કરવાથીજ ગૃહસ્થ શ્રાવકની અંતર બાહર શુદ્ધિ થાય છે.

સ્નાન કર્યા પછી ટુવાલથી શરીર સાફ કરી પહેરવાના વસ્ત્રને પહેરવું. શરીર લુછેલા લુગડાને પહેરવું નહિ તેમજ વસ્ત્ર પહેર્યા પછી અંગ લુછવું નહિ.

સ્નાન થઇ રહ્યા બાદ વસ્ત્ર પહેર્યા પછી જો માથું ભીનું રહી ગયું હોય ને પાણી શરીરપર પડે તો તે સ્નાન નિષ્ફળ જાય છે, ને ફરી સ્નાન કરવું પડે છે માટે માથું પણ પહેલાં લુછી નાખવું જોઇએ. હવે કેટલાક બંધુઓ નાહીને પહેરવાનું વસ્ત્ર અડધું પહેર્યું ના પહેર્યું કરી મંદિર તરફ દર્શનાર્થે દોડે છે, તેમને સમજાવવાની ખાતર અત્રે શાસ્ત્રમાં બતાવેલા નગ્નનું વર્ણન કરૂં છું. તો તેવા ભાઇઓ ક્રોધે ભરાશે નહિ. એમ આશા છે.

નગ્નનું વર્ણન.

અપવિત્ર વસ્ત્ર પહેરનારા, અર્ધું વસ્ત્ર પહેરનારા મેલું વસ્ત્ર પહેરનારા, લંગોટી પહેરનારા, ભગવાં પહેરનારા, ખેસ અગર અંગરખું ન પહેરનારા એ તમામ નગ્નજ ગણાય છે.

કાળું વસ્ત્ર અને લાલ વસ્ત્ર કદાપિ પહેરવું નહિ, પરંતુ સ્ત્રીની શય્યા પર તે વસ્ત્રોનો દોષ નથી.

કાળું અને લાલ વસ્ત્રને શ્રાવક જો પોતાને શરીરે ધારણ કરે તો તે નરકમાં બહુજ પીડા પામે છે.

પરંતુ રેશમી વસ્ત્ર અને રૂમાલમાં કાળાપણાનો દોષ રહેતો નતી. સ્ત્રીઓને પહેરવાનાં વસ્ત્ર પુરૂષોએ પહેરવાં નહિ. તેમજ—

परान्न पर वस्त्रं च पर शय्या पर स्त्रियः ।
परस्य च गृहे वासः शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥

અ० ૩ શ્લોક ૩૦.

બીજાનું એંઠું અન્ન ખાવું, પારકું વસ્ત્ર પહેરવું, પારકી શય્યા પર સુવું, અને પારકી સ્ત્રીનો સમાગમ કરવો, એનાથી ઇંદ્રની સંપત્તિનો નાશ થાય છે, તો મનુષ્યની તો વાતજ શી ?

સ્નાન કર્યા પછી પહેરેલે ભીને લુગડે શરીર લુછવું નહિ, નહિ તો તે સ્નાન નિષ્ફળ જાય છે.

એક વસ્ત્રથી ભોજન કરવું નહિ, દેવપૂજા કરવી નહિ, દાન કરવું નહિ. જપ હોમ કરવું નહિ તેમજ એક ધોતીયું ફાડી બે બનાવેલાં યા ફાડી

ફરીથી જોડેલા ધોતીયાને પહેરીને ક્રિયા કરીએ તે નિષ્ફળ જાય છે.

પહેરવાનું ને ઓઢવાનું એ બન્ને વસ્ત્રના ચારે છેડા સાબુત હોવા જોઇએ. ફાટેલાથી ધર્મિક કાર્ય થઇ શકે નહિ.

વાલછાથી તૈયાર કરેલું એટલે કે ઉનનું વસ્ત્ર કે ચામડાનું વસ્ત્ર સુદ્દલ પહેરવું નહિ,

એવી રીતે શુદ્ધ વસ્ત્ર ધહેરા ખેસ ઓઢી પછીજ સર્વે ધાર્મિક કે વ્યવહારિક ક્રિયાઓ કરવી.

ઉપર જે આચાર બતાવ્યો છે તે ધનવાનોને માટે બતાવ્યો છે, જે નિસ્પૃહ અને ગરીબ હોય તેમણે પોતાની શક્તિ પ્રમાણે કરવો. જેને બીજું વસ્ત્ર ન મળે તેણે એક વસ્ત્રથી પણ ચલાવવું.

ત્રિ. અ. ૩ શ્લોક ૫૦

ત્યારે સ્નાન કરવાને મનુષ્ય અશક્ત હોય ત્યારે ભીના લુગડાથી માથાથી પગ સુધી શરીર લુછી નાંખવું, જેથી તે સ્નાન કર્યા બરાબર ગણાશે. પાણી એ સ્વભાવથીજ શુદ્ધ છે, તેમાં પણ જ્યારે તેને અગ્નિથી તપાવીએ ત્યારે તે વધારે શુદ્ધ બને છે. માટે પંડિત લોક ઉના પાણીથી સ્નાન કરવું શ્રેષ્ટ માને છે.

ઉના પાણીમાં ઠંડું પાણી નાખવું નહિ તેમજ ઠંડા પાણીમાં ઉનું પાણી નાખવું નહિ, કેમકે તેવી રીતે મેળવવાથી જૈન દર્શનને બાધ આવે છે.

વસ્ત્રને જળથી પવિત્ર કરવાનો મંત્ર.

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं अर्हं हं सः परमपावनाय वस्त्रपावनं करोमि स्वाहा ॥

એ મંત્રથી સ્નાન થઇ રહ્યા પછી વસ્ત્રને પવિત્ર કરવું.

વસ્ત્ર પહેરવાનો મંત્ર.

ॐ श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणि सर्वमहाजन मनोरञ्जने परिधानोत्तरीयधारिणि हं सं वं मं हं सं तं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा ॥

એ મંત્રથી પવિત્ર કરેલું વસ્ત્ર :પહેરવું અને એક ઓઢવું, ત્યાર બાદ સંધ્યા ગૃહમાં પ્રવેશ કરશો ?

સ્નાન કર્યા પછી યા સ્નાન ન કર્યું હોય તો પણ આચમન તો અવશ્ય કરવું. કેમકે આચમન કરવાથીજ શુદ્ધ થવાય છે.

એક આચમનમાં બે હાથ, મસ્તક, નાભિ, મુખ, નાક, આંખ, ખભો, એ બારે અંગો એ સ્પર્શ થવો જોઇએ.

આચમન મંત્ર.

ॐ ह्रीं इवीं क्ष्वीं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं हं सः स्वाहा ॥

એ મંત્રથી આચમન ત્રણ વખત કરવું. તેના દરેક વખતે મંત્ર ફરી ફરી બોલવો.

આચમન કરી નમોકાર મંત્રના એકસો આઠ જપ કરવા. ને સંધ્યા કરવાનો રિવાજ હજુ આપણા ગુજરાતમાં પડયો નથી તેમ પૂર્ણથી છે નહિ, તેથી લખી નથી. વળી હાલ જે પાઠ પ્રચલિત છે, તેને રીતસર ગોઠવવાનો છે, જેથી તેને હવે પછી ગોઠવી બહાર પાડીશ.

ઘેર જપ કરવાથી જે ફળ મળે છે તેથી સો સો ધણું ફળ વનમાં જપ કરવાથી મળે છે. અને પવિત્ર બગીચામાં કે અરણ્યમાં જપ કરવાથી હજારઘણું ફળ મળે છે. અને પર્વતપર દશ હજાર ધણું ફળ મળે છે. નદી પર જપ કરવાથી લાખધણું ફળ મળે છે. અને દેવાલયમાં જપ કરવાથી કરોડ ધણું ફળ મળે છે. અને શ્રી જીનેન્દ્રના સમીપમાં જપ કરવાથી અનંત ધણું ફળ મળે છે.

ત્રિ૰ અ૰ ૩ શ્લોક ૨૩-૨૪

દેશનો નાશ, રાજાનો કોપ, શરીરે રોગની પીડા એ કારણોથી જો સંધ્યાદિ કર્મ બંધ રહે તો તેનો દોષ લાગતો નથી.

ત્રિ૰ અ૰ ૩ શ્લોક ૪૩

દેવ, અગ્નિ, બ્રહ્મણ, વિદ્યા એના સંબંધને લઇ જો સંધ્યાદિ કાર્ય અટકી પડે તો દોષ લાગતો નથી.

ત્રિ૰ અ૰ ૩ શ્લોક ૪૪

ઉપર પ્રમાણે ક્રિયા કરી વ્યવસાયમાં પ્રવૃત્ત થવું. ભોજન વિધિ અને શ્રાવકનો આચાર તેમજ મધ્યાન્હ અને સાયંકાલનો વિચાર હવે પછી લખીશ.

જે બંધુઓને ગુજરાતી સામાયક પાઠ શુદ્ધ-હરિગીત છંદમાં તેમજ આલોચના પાઠ ગુજરાતી રાગમાં અને સંસ્કૃત સામાયક પાઠ ગુજરાતી રાગમાં જોઇતું હોય તેમણે નિચેને સ્થળે નામ નોંધવવા વિનંતી છે કે જેથી બહાર પડયે મોકલી શકાય. ભાઇઓ ? ક્રિયાથીજ કર્મ બંધાય છે, તે કર્મથીજ પર્યાય બંધાય છે, માટે દરેક જણનું કર્તવ્ય છે કે શુદ્ધ પર્યાય પ્રાપ્ત કરવા શુદ્ધ કર્મ કરવાં અને સદાચારમય જીવન ગુજારવું. જૈનોએ શ્રેષ્ટતાઇ સદાચારથીજ મેળવી હતી. અને હાલ તેની જે કંઇ ઝંખી દેખાય છે, તે પણ એ સદાચારના રસ્તા વડેજ, માટે દરેક જૈનનું કર્તવ્ય છે કે શાસ્ત્રાનુસાર ક્રિયામાં પ્રવર્ત થવું. હાલ કેટલાક ભાઇઓ નથી કરતા સધ્યા કે નથી જતા પ્રભુ દર્શનાર્થ. તેમને મારી કરગરીને વિનંતી છે કે તેમણે હમેશ પરમાત્માના પવિત્ર મંત્રનો જપ કરવો ને દિવસો ન્યાયયુક્ત વ્યવસાય વડે વિતાડવા અને મહાવીર સ્વામીના સાચા સેવક બની રહેવું. ચારે બાજુથી ઉછરી રહેતા સ્વદેશના જમાનામાં આપણું પણ કર્તવ્ય છે કે આપણે શુદ્ધ હાથ કંતામણ-વણાટનાં વસ્ત્રોનો ઉપયોગ કરવો. આપણા મહાવીર સ્વામીને પણ હાથની કળાજ પ્રિય હતી, જેથી મંદિરના ચંદરવા અને શાસ્ત્રજીનાં બાંધણોમાં પણ ખાદી વાપરવું ચુકવું નહિ.

પરદેશી માલ હાડકાં ઇત્યાદિ અપવિત્ર વસ્તુની કાંજીથી બને છે, જેથી શ્રાવક તેને પહેરવો તો શું, પણ સ્પર્શ પણ નહિ કરવો જોઇએ ? તો મંદિરોમાં તો વપરાયજ કેમ ? વળી હાલ વધતા જતા કેશરના અથાગ ભાવને લઇ કેટલાક દુષ્ટ વેપારીઓ બનાવટી કેશરનો ઉપયોગ કરવા લાગ્યા છે, જેમાં લોહીમાંસાદિ મિશ્ર હોય છે. માટે જૈનોનું કર્તવ્ય છે કે કયાં તો કેશરનો ત્યાગ કરવો અગર સુરત થી પવિત્ર કાસ્મીરી કેશર મંગાવી વાપરવું.

કપટ યુક્ત વ્યાપારના આ જમાનામાં જૈનોએ જાળવીને ચાલવાનું છે. બહારની બીજી કોમોની જેમ જૈનોએ પ્રથમજ પરદેશી કાપડ નહિ પહેરવાની પ્રતિજ્ઞા લઇ પછીજ બાર વ્રતમાંનું અહિંસા વ્રત લેવાનું છે.

સેવા, અહિંસા અને સ્વદેશી વસ્ત્રનો ઉપયોગ એ પણ સદાચારનાંજ અંગ ગણાય છે માટે સત્કર્મનો ઉદય કરવા મનુષ્યની સેવા, સ્વદેશી તરફ પ્રેમ અને અહિંસા મય જીવન અવશ્ય કરવું જોઇએ. આ બાબતપર વધારે લખવા વિચાર છે, જેથી હાલ તો આટલેથીજ બંધ કરૂં છું. ૐ શાંતિઃ શાંતિઃ શાંતિઃ

લખનાર હું છું આપ સર્વેને સદાચારમય જીવનથી ઉન્નતિને ઉચ્ચ સ્થળે જોવાને ઉત્સુક—

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ-કાણીસા.

गज़ल।

क्या कहें किससे कहें, सुनते नहीं फरियाद भी।
सख्त मुश्किल है, महरबां, होगए जल्लाद भी॥१॥
ऐ कौमके पंचो तुम्हें भी, मौत आयेगी कभी।
या भुला दी है कहीं, उसने तुम्हारी याद भी॥२॥
इस क़दरसे जुल्म बरपा, कर रहे हैं पीर मर्द।
रोकता कोई नहीं है, ये बुरी बुनियाद भी॥३॥
बांधते हैं ऊंटकी गरदनमें, बकरी हाय हाय।
हो रहे हैं इस तरह घर सैकड़ो बरबाद भी॥४॥
होगा नहीं कुछ हकमें, अच्छा, बालदेनो देखना।
बेचकर हमको अगर दिलकर रहे हो शाद भी॥५॥
कौनसा वो धर्म है ! वो शास्त्र है जिसमें लिखा।
ब्याह दो बूढ़ोंको वोहै कौनसा उस्ताद भी॥६॥
चंद रोज़ा है अमीरी, ऐ अमीरो ! ये ग़रूर।
कर रहे हो रस्म आगेको बुरी ईजाद भी॥७॥
ऐ दलालो ! क्या दलालीको हमी बाक़ी रहे ?
तान रौशन होगया, छोड़ी नहीं औलाद भी॥८॥
होगा अगर 'पन्ना' हमारी आहमें कुछ भी असर।
मोम दिल हो जायँगे, जो मिस्ल है फौलाद भी॥९॥

पन्नालाल जैन, फुलेरा।
बुकींग क्लार्क।

विना अंगके अंगी कैसे।

समाजकी आधुनिक परिस्थिती पर जब हम नजर डालते हैं, तब इस बातका अनुभव स्वतः होने लगता है कि इसका उत्थान कैसे हो।

मानव हृदय जिसमें धर्म प्रेम एवं समाजोन्नतिके भाव न हो, उसे पाषाण कहकर हम दूर हो जाते हैं तथा खाली गर्जन मात्रसे अभिप्राय रखकर जात्युन्नतिके बाजे बजाकर हम अपनेको कृतकृत्य समझने लगते हैं। लेकिन क्या हम सदैव समाजके उन्नत्यभिलाषी रहते हैं।

समाजकी दशा कैसी हो रही है, विधवाओंकी संख्या और विधवा होनेके प्रबल कारण कौन कौन हैं इसका विचार कर कौन कमर कस दूर करनेको तैयार है।

हां विवाह धार्मिक होनेसे विधवा विवाह पाप है ऐसा हम कहते अवश्य हैं। लेकिन विधवाओंका जीवन जिन कारणोंसे पवित्र बने ऐसे साधन कौन कौन वहांपर हैं। जिस स्थान पर जो कुछ हैं भी वे बहुत ही कम हैं।

धनिक अज्ञ बहुत कुछ (मान क्या क्या नहीं अन्याय कर बैठता है और निर्धन समाज फिर भी उनकी तारीफोंका ढेर लगा देती है उनकी हां में हां मिला कर कौन नहीं अपनेको धन्य समझता, किन्तु क्या गरीब भाई वृद्धका कभी विवाह देखा सुना है। गरीबोंके हृष्ट पुष्ट कुंवर करे रह जाते हैं और धनिक विकलांग भी क्यों न हों तासे १ दिनमें विवाह कर लेते हैं किसने कब इन बातों (कारणों) पर विचार किया है। अन्याय अत्याचारोंका सूत्रपात कहांसे शुरू होता है। आधुनिक विद्वत्समाजने क्या कम काम किया है फिर भी उसका सन्मान वरदेवदास आदि विद्वानोंकासा न होकर तिरस्कारयुक्त क्यों होरहा है।

जाति पोछ और मंदिर आदिके सामान रुपये, आदिके हड़पनेसे मुकद्दमे चलरहे हैं सो क्यों? यह आपसमें द्वेषाग्निका कारण क्या? एवं समाजके रुपयेका उपयोग जैसे अपने १ पैसेके देनेसे दुःख होता है वैसा क्यों नहीं हम करते हैं। हम देखते जहां ५०) रुपयेसे काम चलसकता वहां २००) तक खर्च करदिये जाते हैं। समाजमें मैत्रीभाव वात्सल्य भाव क्यों नहीं? आपसमें विरोध एकको देखकर एक क्यों जलते हैं। धर्मसे चिगतेको स्थितिकरण और दोष देखकर उपगूहन कौन पालते हैं? हम यह अच्छी तरह जान चुके कि जब हमारा कारण कलाप ही बिगड़ रहा है फिर हम कैसे अपना व समाज जो हमारे आश्रित है उद्धार कर सकते हैं। अतः यह कहना पड़ता है कि **विना अंगोंके क्या अंगी कभी हो सकता है?**

सुमतिचन्द्र जैन, उपदेशक महासभा।

नये २ ग्रंथ मगाइये।

प्राचीन जैन इतिहास प्रथम भाग ॥।)

जैन बालबोधक चौथा भाग—इसमें ६७ विषय हैं। पृ० ३७२ होनेपर भी मू० सिर्फ १=) है। पाठशाला व स्वाध्यायोपयोगी है।

आत्मसिद्धि—अंग्रेजी, संस्कृत, गुजराती ॥।)

जिनेंद्रभजनभंडार (७१ भजन) ।-)

मैनेजर—**दि० जैन पुस्तकालय—सूरत।**

लाख (लाह)की उत्पत्तिमें घोर हिंसा।

बेरके दरखत पर कार्तिक महीनेमें वीज लगाया जाता है बेरकी डालीपर बहुतसे जीव रहते हैं उस डालीको १ हाथ प्रमाण काटकर एक २ दरखतपर १९–२० बीसर टुकड़े रखते हैं उस टुकड़ेपरसे जीव बेरके दरखत पर चढ़ जाते हैं व कच्ची डालीका रस पीते हैं, जन्मते, मरते हैं, मर कर उस डालीपर चिपट जाते हैं इस तरह छ महीनातक जन्मते मरते हैं। एक २ दरखतपरसे ॥ऽ) आधमन पचीस सेर ऽ॥१ लाहा उतरती है फिर इसी तरह ऊपर लिखे अनुसार वैशाख महीनेमें फिर वीज बोया जाता है, यह लाख सूखा-मांस है। यह जीव बहुत सूक्ष्म होते हैं १ तोला लाहमें असंख्य जीवोंका मांस (कलेवर) समझना चाहिये। जिस वक्त लाख डालीपरसे छुड़ाई जाती है तो छुड़ानेवालोंके हाथ रक्तसे लाल होजाते हैं। लेकिन लाखकी उत्पत्ति बंगाल आशामके हमारे माड़वाड़ी जैनभाईयोंने बहुत जोरसे कर रखा है। बहुतोंने त्याग दिया है बेंगाल, आसाममें आकर यहांपर ऐसी प्रथा देखकर हमारा हृदय बहुत कंपायमान होता है। इससे हमारा अपनी माता भगनियों बाईयोंसे नम्र निवेदन है कि इसके चूड़ेका पहराव अवश्य करके शीघ्र त्याग देना चाहिये। मैं बहुत दुखके साथ लिखता हूं कि हमारे बंगाल, आशामके जैनीभाई लाखका व्यवसाय विशेषकर करते हैं। व अपनी २ जमीनोंमें बेरके दरखत हैं। लाखका भाव ६०) ७०) रुपिया मन विकता है इससे यह भाई लोभके वशीभूत होकर घोर हिंसाके कार्य करते हैं उन भ्राताओंसे हमारा नम्र निवेदन है कि घृणित कार्यको थोड़ेसे स्वार्थके लिये त्याग दीजिये।

सोनपाल, उपदेशक।

नोट–हिंसाकारी लाखकी चूड़ियोंका रिवाज बंद होना चाहिये तथा दयावान श्रावकोंको इस हिंसाकारी व्यापारसे धन न पैदा करना चाहिये।

ग्रन्थ मंगानेका सुभीता

यदि आपको किसी भी जैन ग्रंथकी आवश्यकता हो तो सूरतके "दिगंबर जैन पुस्तकालय"से ही मगाइये क्योंकि यहां सभी जैन पुस्तकालयोंमें मिलनेवाली पुस्तकें मिलती हैं व कमसेकम पांच रुपयेकी पुस्तकें मंगानेसे फी रुपया एक आना "**कमीशन**" भी दिया जाता है। इस पुस्तकालयका विस्तृत नवीन **सूचीपत्र** छप रहा है जो आगामी अंकके साथ बांटा जायगा।

सोलहकारण धर्म।

अभी ही नवीन छपकर दूसरीवार तय्यार हुआ है। इसवार इसमें सोलहकारणव्रत कथा व सोलह भावनाओंके सोलह सवैये भी बढ़ा दिये गये हैं। व कुछ बढ़ाया घटाया भी गया है। की० ॥)

नित्यपूजा सार्थ

इसमें नित्य पूजा हिंदी भाषामें अनुवाद सहित भी ही नवीन प्रकट हुई है। पृ. १२८ व मू० **आठ आने।**

जैन नित्य पाठ संग्रह।

नामक १६ जैन स्तोत्रोंका गुटका जो अभी नहीं मिलता था फिर मिल रहा है। मू० आठ आने

मैनेजर, **दिगम्बरजैनपुस्तकालय–सूरत।**

बाल-परिचर्या और औषधि-सेवन से हानियां।

लेखक-श्रीयुत डाक्टर गिरिवर सहाय।

इस लेखमें अनियमित आहार और औषधोपचारके बुरे परिणाम और मांडमय भोजन (स्टार्ची फुड) के दुरुपयोग दिखानेकी चेष्टा की गई है। पाठको! क्या आपने कभी विचारा है कि सभ्य समाजमें इतनी रोग-वृद्धि क्यों दिखाई पडती है। मनुष्योंको तो अपनी बुद्धि और चिर संगृहीत अनुभवके कारण संसारमें सबसे अधिक स्वास्थ्य संपन्न और निरोग प्राणी होना चाहिये था, परन्तु वास्तविक दशा इसके बिलकुल विपरीत है। हजारों वर्षोंसे व्यावसायिक चिकित्सकों और अताइयोंने हमारे शारीरिक आरोग्यका ठेका ले रखा है। वैद्यों और अताइयोंकी संख्या दिन दिन बढती ही जाती है। जिधर देखो उधर दवाइयोंके इश्तहार दिखाई देते हैं। जहां तहां औषधालय और जगह जगह अस्पताल खुलते जाते हैं, तो भी जनसाधारणमें रोग फैलते ही जाते हैं—तन्दुरुस्तीकी जगह बीमारीका राज है?

क्या आप नहीं जानते कि आजकल नवजात बच्चोंकी एक बड़ी संख्या बाल्यकालमें ही विकराल कालके गालमें चली जाती है, और जो शेष बच भी जाते हैं उनका स्वास्थ्य और शारीरिक संघटन, आदर्श तो दूर रहा, संतोषजनक भी नहीं होता। जब हम अपने देशके हजारों बालकोंको चारों ओर रोगसे पीडित देखते हैं तो कलेजा कांप उठता है। उनका केवल अस्थिचर्म-मय पंजर, पीला और मुर्झाया हुआ चेहरा, पिचके हुए गाल, बैठी हुई आंखें, निकला हुआ पेट और सूखी टांगें दूरसे ही उनकी शोकजनक अवस्थाका पता देती हैं। जहां माता पिताका स्वास्थ्य' उनकी प्रजननार्थ योग्य अवस्था और गर्भाधान, गर्भावस्था और प्रसवकालके संस्कार बालकोंकी इस शोकजनक परिस्थितिके लिये, उत्तरदायी ठहराये जा सकते हैं, वहां जन्म पाने पर बालकों और उनकी माताओंके आहार विहारका प्रभाव भी उनका स्वास्थ्य बनाने या बिगाड़नेमें कुछ कम नहीं पडता। बहुधा माता पिता अपने बच्चोंको छोटी उम्रमें ही मिठाई खिलाने लगते हैं। उस अवस्थामें मिठाईका सेवन करनेसे उनका पाचन हमेशाके लिये बिगड जाता है। इसी तरह भांति भांतिके गरिष्ठ पदार्थ और मसाले भी उनके कोमल पाचन-संस्थान पर बहुत बुरा प्रभाव डालते हैं और उनको सदाके लिये असाध्य रोगोंका शिकार बना देते हैं, जिनके कारण वह अधिकांशमें तो छुटपनमें ही मांकी गोद सूनी कर जाते हैं और जो बच भी जाते हैं तो उनका जीवन उनके बिगडे स्वास्थ्यके कारण सदाके लिये दुःखमय होजाता है।

प्रस्तुत लेखमें इसी आहार विधिकी विवेचना की गई है। सभ्यताकी उन्नतिके साथ मनुष्य समाजमें भोजनके व्यंजनोंमें भी नई नई ईजादें और उनकी संख्यायें बढ़ती होती जाती है और हम एक साथ तरह तरहके भोजनोंका स्वाद लेनेके लिये आदी हो गये हैं। दूध, मांस, शाक, भाजी, अन्न और तरह तरहकी

मसालेदार चीजें एक साथ खानेमें हमें जरा भी संकोच नहीं होता, बल्कि उलटा मजा आता है। यही वजह है कि इन भिन्न भिन्न गुणस्वभाववाले और बहुधा बेमेल पदार्थोके खानेसे हमारा हाजिमा बिगड जाता है और उसे दुरुस्त करनेके लिये हमें नित नये चूर्णो और हकीमों या डॉक्टरोंके बहुमूल्य नुस्खोंकी जरूरत पडती है।

यदि हम उस विषयमें जानवरोंसे कुछ शिक्षा लें तो मालूम होगा कि जंगली जनवरों और बहुधा हमारे घरेलू जानवर भी—जबतक कि उनकी स्वाभाविक स्वतन्त्रता छिन नहीं जाती अपनी तन्दुरुस्ती कायम रखनेके लिये किसी डाक्टरकी सहायताके मुहताज नहीं होते। वे अपने खानपानमें स्वाभाविक नियमोंके इतने पाबन्द होते हैं कि मनुष्यकी तरह आये दिन उन्हे भांति भांतिके रोगोंका सामना नहीं करना पडता। इसी तरह मनुष्योंमें भी यदि खाने पीनेके मामलेमें ठीक ठीक अहतियातका बर्ताव होने लगे तो हमारी दशा बहुत जल्द सुधर सकती है और हमारे बीचसे बदहजमी, बवासीर, पेचिश, सूजा, क्षयी, प्रभृति तरह तरहके रोग पीडितोंकी संख्या भी बहुत घट सकती है।

बीमारोंका मुकाबिला केवल दवाओंके भरोसे पर नहीं किया जासकता। जबतक खानेपीने या तन्दुरुस्तीके अन्य साधारण नियमोंके पालनमें काफी अहतियात न बर्ता जावेगा इस सम्बन्धमें सफलता होना मुश्किल है। अक्सर दवाओंके इस्तेमालसे लाभके बदले हानि होती है। और अक्सर यह भी होता है कि एक दवाके विषयमें दो डाक्टरोंकी राय एकसी नहीं होती। इसी तरह वही दवा जो किसी बिमारीके शुरूमें लाभ करती है बाद को नुकसान पहुंचा सकती है। ऐसी हालतमें दवाओंके इस्तेमालसे किसी निश्चित लाभकी आशा करना बेकार है। इसके विपरीत हम प्राकृतिक उपचारोंपर हमेशा भरोसा कर सकते हैं। स्वाभाविक नियम अचूक होते हैं और बीमारीकी हालत बदलनेके साथ साथ वह भी बदलते रहते हैं। किसी स्थानीय पीडाके तात्कालिक कष्टको दवा देनेमें दवाओंका इस्तेमाल बहुधा लाभदायक होता है और बहुतसी दवाइयें खासकर खनिज दवाइयें और वनस्पतिक दवाओंके सत इतने तेज और अस्वाभाविक होते हैं कि उनके इस्तेमालसे निस्संदेह हमारी तन्दुरुस्तीको नुकसान पहुंचता है और कभी जान जोखिममें पड जाती है। इसके विपरीत किसीने यह तो कभी सुना न होगा कि दवाइयें हमारे शरीरकी किसी कमीको स्थाई रूपसे पूरा करसकती हैं। पर स्वाभाविक नियमोंके अनुकूल चलनेसे यह अभीष्ट सिद्ध हो जाता है।

सच बात तो यह है कि हम प्रकृतिके कामोंमें बेजा दखल न दें तो वह बराबर हमारे जीवनके प्रत्येक क्षणमें हमारे शारीरिक सुधारका काम चुपचाप बडी सरलतासे किया करती हैं और नये रंग और रेशे बनाती और इसी तरह बेकार माद्दको बाहर निकलती रहती हैं। प्रकृतिमें नया माद्दा पैदा करनेकी शक्ति है, दवामें नहीं। आदमीका शरीर एक भोजन खानेवाला एंजिन समझना चाहिये, यह एंजिन तब ही ही ठीक

ठीक चल सकता है जब कि उसे उसकी आवश्यकतानुसार भोजन रूपी ईंधन ऐसे रूपमें दिया जावे जिसे कि वह सहजमें पचा सके। प्रायः सब रोगोंका असली कारण उसी एक मुख्य चीजका, जिसपर हमारे, जीवनका आधार है अर्थात भोजनका, अनियमित प्रयोग है। उससे यह नतीजा निकलता है कि खानपानके स्वाभाविक नियमोंपर चलनेसे हमारी तन्दुरुस्तीकी हालत बहुत अच्छी होसकती है। थोडे शब्दोंमें यही स्वास्थ्यका रहस्य है और वैद्यों या डाक्टरोंकी कोई व्यवस्था या औषधि विक्रेताओंके लम्बे चौडे इश्तहार इसे बदल नहीं सकते। जब यह बात सब लोग भली प्रकार समझ जावेंगे तभी नये सिरेसे हम लोगोंकी तन्दुरुस्तीके जिंदा होनेकी उम्मीद की जासकेगी। उस समय बीमारी किसीकी सहानुभूतिका विषय होनेके बदले हमारे लिये लज्जा और अपमानकी बात होगी।

हमारी उम्र कितनी ही ज्यादा क्यों न हो गई हो हम 'स्वाभाविक' साधनोंपर भरोसा कर सकते हैं। मेलर महाशयने अपनी पुस्तकमें एक व्यक्तिका जिक्र किया है जिसकी उम्र पचास सालकी थी। वह कब्ज और बदहजमीका लगभग बीस बरस तक डाक्टरोंका इलाज करा चुका था। जब मेलर महाशयसे उससे भेंट हुई तो वह सालभर तक एक बडे नामी डाक्टरका इलाज कर चुका था। उस डाक्टरकी आज्ञा थी कि वह सब तरहके फलोंसे—चाहे कच्चे हों या पक्के परहेज करे, और दूधका इस्तेमाल खूब करे। वह बहुत दुबला और कमजोर होगया था। एक बडा फोडा उसकी गर्दनपर था और उसकी सांससे बडी दुर्गंध आती थी। उसे बहुत समझाने बुझानेपर और फिर भी बहुत डरते डरते, उसने एक नारंगी खानेका नियम किया। उसे यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि नारंगीसे उसे कोई नुकसान न हुआ। धीरे धीरे उसने विधिपूर्वक नारंगी, नींबू, सेब, अंगूर, मुनक्का और बादामका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। वह अपना मामूली भोजन भी करता था। एक महीनेके भीतर ही उसकी दशा इतनी सुधर गई कि मानों उसके लिये संसार ही बदल गया। उसकी शारीरिक और मानसिक दशाओंमें पहिलेकी बनिस्बत जमीन आसमानका अंतर होगया। उसके शरीरसे बडा भारी बोझ उतर गया और सो भी बिना एक पाईकी दवाके। यह व्यक्ति यद्यपि मेवा फरोश था पर जबतक वह डाक्टरोंके इलाजमें रहा जो चीज वह रोज बेचता था और जिन्हें खानेको उसका जी भी बहुत चाहता था उन्हीं चीजोंको खानेसे वह वंचित रहा। ऐसे और भी बहुतसे उदाहरण हैं। अनेक नरनारी, जिन्होंने फिर अच्छे होनेकी आशा छोड दी थी और बालक जिनके माता पिता उनकी जिंदगीसे हाथ धोचुके थे, इसी स्वाभाविक उपचार और फलाहार की बदौलत बिलकुल भले चंगे और हट्टे कट्टे होगये हैं। दवाओंका इस्तेमाल अस्वाभाविक हैं। उनके भरोसे किसी असाधारण लाभकी, जो स्वाभाविक साधनोंसे प्राप्त न होसके, आशा करना व्यर्थ है। साफ खून ही बीमारियोंसे बचनेका एक मात्र उपाय है और स्वाभाविक साधनोंसे खूनकी सफाई और नये खूनकी उत्पत्ति सहजमें होसकती है। (विज्ञान)

दो मित्रोंका वार्तालाप।

टेकचंद—मित्र रामचन्द्र यह तो आप जानते ही हैं कि इस समय जैन जातिकी दशा एक विचित्र ही रूपमें परिवर्तित है परन्तु, अफसोस है उसकी नादानीपर ? क्योंकि जिस मार्ग पर उसे चलनेसे रोका जाता है वह उसी मार्ग पर चलनेको तयार होती है और समझानेपर बाज नहीं आती। क्या यह उसकी अच्छी समझ है ?।

रामचन्द्र-प्रियवर जैन समाज कुछ भोली नहीं है जो वह अच्छे मार्गपर चलनेको तयार न हो। उसकी न समझीका एक दूसरा ही कारण है वह यह कि इस समय समाजमें कुछ ऐसे स्वार्थी लोग पैदा हुए हैं जिन्होंने समाजको नष्ट भृष्ट करनेका बीड़ा उठा लिया है, यदि ये लोग ठीक रस्तेपर आजावें तो सम्भव है कि समाज भी ठीक रास्तेपर आजगे।

टेकचंद—मैं यह कब कहता हूं कि समाज भोलीभाली है, वह तो ज्ञान सम्पन्न चतुर है, पर मैं यह कैसे जानू कि समाज भोली नहीं है। जब कि यह इतना भी विचार नहीं करती कि जिन कुरीतियोंसे मेरी हानि हो चुकी है और होती जा रही है उनको मैं छोड़ दूं ! किंतु वह तो पुरानी ही लकीरकी फकीर बनी है।

रामचंद—प्रियवर सुनिये ! कुरीतियोंसे मुक्त होना समाजके लिये बड़ी कठिन बात है क्योंकि जितनी कुरीतियां समाजमें प्रचलित हैं वे सब समाजके बड़े घरोंसे ही शुरू हुई हैं अब उनको मेटनेवाला कौन होसक्ता है यदि आप यह कहेंगे कि महासभा। तो मैं कहूंगा कि महासभा क्या करे। महासभा जो प्रस्ताव पास करती है उसके अनुसार लोग चलनेको तयार नहीं होते। संभव है छोटेलोग प्रस्तावको पास कर भी सकें परन्तु बड़े लोगोंपर प्रस्तावका असर ही नहीं पड़ता और न वे उसे मानेनेको तयार ही होते हैं। हम देखते हैं कि बालविवाह बड़े घरवालोंने ही चलाया, वृद्ध विवाहकी शौक बड़ोंको ही हुई जिससे समाजमें कन्याविक्रयकी प्रथा जारी हुई और छोटी २ बालिकाएं विक्रय होकर बुड्ढोंकी शिकार हुई इसहि मैं कहसक्ता हूं कि समाजमें जितनी कुरीतियां हैं वे सब धनवानों हीके द्वारा उत्पन्न हुई हैं और यह भी मैं कहता हूं कि वे (कुरीतियां) उन्हींके द्वारा मिटसक्ती हैं।

टेकचंद—प्रियवर ! आपका यह कहना मैं सहर्ष स्वीकृत करता हूं परन्तु शंका इस बातकी है धनवान लोगोंने ही कुरीतियां चलाई और धनवान लोग ही समाजकी छोटी बालिकाओंके शिकार करनेवाले हैं परन्तु यदि निर्धन लोग धनवान लोगोंको अपनी पुत्रियां न देवें तो फिर धनीलोग क्या जबरन उनकी पुत्रियोंका शिकार कर सक्ते हैं, नहीं नहीं ऐसा वे कदापि नहीं कर सक्ते हैं। यह दोष तो उन्हीं निर्धनोंके सिर है जो अपनी पुत्रियोंको धनके लोभसे धनवानोंको बेचते हैं और उससे मनमाना रूपया लाते हैं।

रामचंद—प्रियवर ! मैं इस बातको दावेके साथ कहूंगा कि कन्याविक्रयकी कुरीतिकी जड़ जमानेवाले धनवान पुरुष ही हैं। ध्यान दीजिये, कि कोई सिंघईजी ऐसे हैं कि जिनके ४०

वर्षकी अवस्था तक २ विवाह हो चुके और दो एक संतान भी हो चुकी परन्तु कर्मानुसार स्त्रीका मरण हो जानेसे सिंगईजीको फिरसे विवाहकी फिकर पड़ गई इतने पर भी सिंघईजीको संतोष न हुआ और अपनी कामवासनाओंकी पूर्तिके लिये किसी गरीबको हजार दो हजार रुपयोंका लोभ दिखाकर ५०–५५ वर्षकी अवस्थामें अपना तीसरा विवाह करनेकी कोशिश करने लगे और १० वर्ष ही की पुत्री ५ या ७ हजारमें खरीदकर अपनी मुराद पूरी करनेमें लग गये। प्रियवर ! अब विचारिये कि जब सिंघईजी हुए स्मशानपर ले जानेके लायक और वह पुत्री हुई १८ वर्षकी। १८ वर्षकी अवस्थामें वह बिचारी दीन कन्या विधवा होजाती है। अब बताईये कैसे न समाजमें व्यभिचारकी प्रवृत्ति हो और कैसे नहीं विधवाओंकी वृद्धि हो तथा कैसे नहीं समाजकी संख्या दस वर्ष घटे। मर्दुमशुमारीसे मालूम होता है कि सन १९११ में जैनियोंकी संख्या १२,४८१८२ थी परन्तु १९२१ की गणसंख्यामें रही ११,७८,५९६ अब सोचिये कि आप १० वर्षमें ६९५८६ कम होगये यह सब समाजके घटनेका कारण बालविवाह आदि कुरीतियोंसे बढ़कर कन्याविक्रयका है, अब भी हमारी समाजके लोग नहीं चेतते।

टेकचन्द–प्रियवर आपका कहना बहुत ही सत्य है, पर मेरी समझमें कन्या विक्रयके संचालक निर्धन और धनवान दोनों ही हैं। क्योंकि बहुतसे निर्धन ऐसे हैं जो धनके लालचमें फंस पुण्य पापका विचार नहीं करते और अपनी कन्याको एक दर्शनी हुंडी समझकर उसके भंजाने (टके करने)का प्रयत्न रात्रि दिन किया करते हैं और किसी न किसी धनवानसे वह अपनी कन्यारूपी दर्शनी हुंडी भंजाकर रुपयोंसे घर भरते हैं। कोई२की सौदा ९००) में होती है, तो कोई२ पर २०००) तक चढ़ जाते हैं तो भी बेचनेवाला मंजूर नहीं होता तब तो खरीददारको १२००) देकर खरीदनी पड़ती है कहांतक कहा जाय यह निर्धनोंकी करतूत धनवानोंका हाल तो किसीसे छिपा नहीं उसकी आलोचना फिरसे करना पाठकोंका समय खोना है।

रामचंद्र–मैं भी तो मानता हूं कि यह कन्याविक्रयका दोष दोनोंपर है, धनवानों और निर्धनोंपर परन्तु प्रियवर निर्धनोंकी अपेक्षा यह (कन्या विक्रय) दोष धनवानोंपर ज्यादे है कन्याविक्रयकी प्रथा धनवानोंहीके द्वारा समाजमें प्रचलित हुई है और होती जारही है। मैं सत्य कहता हूं कि जबसे यह कन्याविक्रयका [illegible] समाजमें जारी हुआ है तबसे विधवाओंकी वृद्धि हुई और निर्धनोंके सुयोग्य बालक अविवाहित रह गये। प्रियवर ! समाजमें ऐसे अनेक गरीबोंके बालक अविवाहित फिरते हैं जो समाजका कुछ उद्धार भी करने लायक हैं, परन्तु वे बिचारे धनके विना अपना विवाह नहीं कर सके क्योंकि जब पेस्तर कन्याके पिताको ९००) या १०००) रुपया नजराना का दिये जांय तब कहीं गरीबोंके पुत्र विवाहे जांय। इतने रुपया निरधनोंके पास कहां इससे निर्धनोंके पुत्रविवाहसे रहित रह जाते हैं और कोई २ छिपे रुस्तम अपनी कामलालसाओंको पूरा कर पाप कमाते हैं।

टेकचंद–मित्रवर ! आप अब मुझे यह बतला-इये कि किस तरहसे यह कन्याविक्रयकी जबरदस्त प्रथा समाजसे दूर हो और समाज अच्छी नीतिका अवलंबन करे ।

रामचंद–मित्र टेकचंदजी ! कन्याविक्रयकी प्रथाको समाजसे हटानेका मुख्य उपाय यह है कि महासभा यह प्रस्ताव पास करे कि निर्विवाहित बालक १९ वर्षकी उमरके नीचे न विवाहे जावें और विवाहित पुरुष ३० वर्षकी उमरके ऊपर न विवाहे जावें, और जो यह ४० और ४९ वाला प्रस्ताव महासभाने पास किया है वह रद्द करदिया जावे, दूसरी बात जो भाई अपनी कन्याके विवाहमें लड़केवालेसे रुपया लेवे उसे पंचायतकी तरफसे उचित दंड दिया जावे और वही दंड रुपया देनेवालेको दिया जावे, एवं यह बात भी उसी प्रस्तावमें सामिल रहे, ऐसा करनेसे बहुत ही जल्द कन्याविक्रयका क्रम समाजसे दूर हो जावेगा ।

टेकचन्द–मित्रवर आपको धन्य है जो इस तरह कन्याविक्रयकी प्रथाको दूर करनेका उपाय मुझे बताया अब मैं भी इसके हटानेका प्रयत्न जहां तहां करूंगा । और अब मैं घर जाता हूं फिर कभी आपसे मिलूंगा । अच्छा लीजिये जय जिनेश ।

लेखक–
पं० गोरेलाल पंचरत्न प्रेमी
रैपुरा (पन्ना) निवासी ।

दीपमालिका विधान (दीवाली पूजन) –)
दीवालीके कार्ड बारह आने सैंकड़ा
मगानेका पता–
मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय–सूरत ।

प्रवृत्ति ।

(લેખકઃ-માસ્તર સી. જી. ગાંધી-ઇડર)

પ્રવૃત્તિ એ એવી ચીજ છે કે જેના વિના સંસારનું ગાડું નભવું અશક્ય થઇ પડે. તેના વિના દુનિયા શૂન્યવત ભાસે. જે શુભાશુભ કાર્યો કલ્પના સૃષ્ટિમાં યા આચાર સૃષ્ટિમાં માલૂમ પડે છે તે સર્વ પ્રવૃત્તિનેજ આભારી છે. આખું જીવન તેના ઉપરજ નિર્ભર છે એમ કહું તો તે કંઇ અતિશયોક્તિ ભરેલું ગણાશે નહિ. નોકરશાહીનો અસહકાર કરી ભલે ભારત સંતાનો પોતાનું સ્વાતંત્ર્ય જીવન નભાવી રાખે પરંતુ આબાલવૃદ્ધ એકે મનુષ્ય એવો બતાવશો કે જે પ્રવૃત્તિનો અસહકારી પોતાનું જીવન ટકાવવા વૃથા પ્રયત્ન કરતો હોય? મનને કલ્પના સૃષ્ટિમાં રમતું મૂકવું તે પણ એક પ્રવૃત્તિનો પ્રકાર છે. તેને આન્તરિક પ્રવૃત્તિ કહેવામાં આવે તો તે અસ્થાને ગણાશે નહિ. તેનાજ ફલરૂપ બાહ્ય પ્રવૃત્તિનો-શારીરિક પ્રવૃત્તિનો આચારસૃષ્ટિમાં પ્રાદુર્ભાવ થાય છે. ત્યારે એટલું તો સ્પષ્ટ થયું હશે કે **પ્રવૃત્તિ એ જીવન છે અને જીવન એ પ્રવૃત્તિ** છે-પછી ભલે તે સત્ પ્રવૃત્તિ હોય યા અસત્ પ્રવૃત્તિ હોય.

દુનિયામાં જે બધી પ્રવૃત્તિઓ દૃષ્ટિગોચર પડે છે તે બધી ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષ એ ચાર પુરૂષાર્થને અનુરૂપ હોય છે કેટલાક ધર્મનેજ અનુલક્ષી વર્તન રાખે છે, તો કેટલાક પૈસાજ કમાવવામાં પોતાના જીવનની સાફલ્યતા માની બેસે છે; કેટલાક ભોગવિલાસમાંજ રચ્યા પચ્યા રહે છે, તો કેટલાક વીરલા પુરૂષો મોક્ષનેજ જીવનનો અન્તિમ ઉદ્દેશ જાણી તેની પ્રાપ્તિ અનુરૂપ પ્રયત્નો આદર્યા કરે છે, ધર્મ અને મોક્ષના વિચારથી અળગા રહી ફકત અર્થ અને કામનેજ અનુલક્ષી પ્રયત્નો આદરે તો તે અસત્ પ્રવૃત્તિ કહી શકાય ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષ એ ચારોને એક બીજાને અવિરોધરૂપ સેવવા તેજ સત્ પ્રવૃત્તિ હોઇ શકે; કારણકે તેથી મનુષ્ય પર્યાયની સાર્થ-

કતા-જીવનનું અંતિમ ધ્યેય જે સાચુ સુખ મોક્ષ તે સાધી શકાય છે. જે પ્રવૃત્તિઓમાં ધાર્મિક અંશ હોતો નથી તે સર્વ વ્યર્થ છે. અસત્ છે, શકિતના દુરૂપીયોગની પ્રણાલીકાઓ છે અને આત્મવિકાસ કરવામાં આડ ખીલીરૂપ છે.

મનુષ્ય જન્મથી મરણ પર્યંત પ્રવૃત્તિ પરાયણજ હોય છે. नहि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मवत् એક ક્ષણવાર પણ કર્મ વિના પ્રવૃત્તિ વિના કોઇ રહી શકતું નથી. મોહમાયાએ એટલું પ્રબલ સામ્રાજ્ય આપણા ઉપર જમાવી દીધું છે કે કેવા પ્રકારની પ્રવૃત્તિઓ મનુષ્ય પર્યાયની સાર્થકતા સિદ્ધ કરવા અનુરૂપ છે તે આપણને સુજતું નથી. અનાદિ કાળથી વળગી રહેલી આ મોહ, માયા, (કર્મ-બંધન) તેથી મુક્ત થવું તે મનુષ્ય પર્યાયની સાર્થકતા છે. જેણે એ સાર્થકતા સિદ્ધ કરી નથી તેણે મનુષ્ય પર્યાય એળે ગાળી છે એમ કહેવામાં હરકત નથી. આત્મજ્ઞાન થયા વિના કર્મ બંધન શિથિલ કરી શકાતું નથી, અને તે જ્ઞાન ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓમાં રોકાયા સિવાય ક્રમશઃ પ્રાપ્ત કરી શકાતું નથી.

ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓમાં રોકાવું એટલે ચારિત્રમય બનવું એ વાત ખરી, કારણકે ચારિત્રનો ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓ સાથે ગાઢ સંબંધ છે; પરંતુ મંદીરમાં જઇ પ્રભુનાં દર્શન કરી, કરેલાં પાપનો પશ્ચાતાપ કરી પ્રભુનાં ગુણગાનમાં બેત્રણ સ્તવન બોલી બેત્રણ માળાઓ ફેરવી, શાસ્ત્રનો સ્વાધ્યાય કરવાં, ટીલાં ટપકાં કરવાં, સૂક્ષ્મ જીવોપર દયા બતાવવી કંદમૂલ-લીલવણ વગેરે ખાવાની બાધા કરવી, કીડી-મંકોડાનો ઘાત ન થાય તે માટે કાળજી રાખવી; અને દુકાને બેસી હલાહલ અસત્ય બોલી સામા માણસનાં ગળાં રેંસવાં, ઓછું આપી વધારે લેવું, ખોટાં માપ-તોલ રાખવાં, માલની સેળભેળ કરી સામા માણસને ઠગવો, વિશ્વાસઘાત કરવો, ખોટી સાક્ષીઓ પુરવી, ખોટા દસ્તાવેજ કરવા, યોગ્ય સમય કરતાં વધુ સમય સુધી અતિલોભથી હજારો મણ અનાજનો સંગ્રહ કરી કરોડો જીવોની હિંસાનું કારણ થઇ પડવું વગેરે અધર્મના કાર્યો કરવાં, ત્યાં શાસ્ત્રસ્વાધ્યાય કયાં ગયો? પ્રભુના દર્શન વડે પ્રાપ્ત કરેલ ધાર્મિક નવીન ચેતન કયાં ઉડી ગયું? ચારિત્ર કયાં રહ્યું? આ તો નાના જીવોને પાળવા અને મોટા જીવોને મારવા એવો ધર્મ થયો. (મારો કહેવાનો હેતુ એવો નથી કે કંદમૂળ ખાવાં, કીડી મંકોડાને મારવાં, પરંતુ આવી સૂક્ષ્મ અહિંસા પાળવાવાળા સ્થૂળ અહિંસા કયાં પાલતા નથી?) આપણામાંના ઘણાખરાઓ આવો ધર્મ પાળનારા બગભગતો છીએ-પ્રભુને છેતરનારા-ઠગારા છીએ; પરંતુ આ સર્વનું પ્રાયશ્ચિત પ્રથમ ધર્મની લગામ ઝાલી રાખવાનો દાવો કરતા **પંડિતનાં પુંછડાંઓને, ભ્રષ્ટાચાર ભટ્ટારકોને પોથીમાંના રીંગણાંવાળા શાસ્ત્રીઓને**, ધર્મને નામે ધતીંગ મચાવનાર સાધુઓ વગેરેને કરવાનું રહ્યું; કારણકે આપણામાં જે ધાર્મિક સળો ઘર કરી રહ્યો છે તેને જન્મ આપનાર તેમના ચારિત્રની વિહવલતાજ છે. તેઓ જે ઉપદેશો આપે છે તેનાથી અન્યથા પ્રવર્તતા આપણે તેમને જોઇએ છીએ. તેઓ જાતેજ વ્યભીચારી હોય, પરસ્ત્રી પર દૃષ્ટિપાત કરતા હોય, અસત્ય બોલતા હોય, અનાવશ્યક પરિગ્રહ રાખતા હોય, પ્રપંચની જાળ પાથરતા હોય, લોભાભિભૂત હોય, તો પછી તેમના ઉપદેશની અસર જનસમાજ ઉપર કેવી થશે તે કલ્પવું સહેલું છે. આપણામાં દોષો ઘણા હોય છે, અને તેમને પોષવા પુરતું કંઇપણ પંડિતો વગેરેમાં જોવામાં આવે છે, તો વિના વિઘ્ને તેને ગુણ સમજી ગ્રહી લેવા પ્રેરાઇએ છીએ; અથવા ચારિત્ર પથપર ચાલવા પ્રયાસ કરવા મનુષ્યો એવી દલીલથી પોતાની ભૂલનું સમાધાન કરી લે છે કે, આવા આવા ભણ્યા ગણ્યા જાણકાર જ્ઞાનીઓ આવા આવા દોષો કરે છે તો પછી આપણાથી એવા દોષો થઇ જાય એમાં શી નવાઇ?' આટલા માટેજ આપણુ ચારિત્ર સુધારણામાં પ્રગતિશીલ બની શકતા નથી. જો તેઓ ખરા જીગરથીજ જનસમુહને ધર્મ પથપર દોરવા ઇચ્છતા હોય તો પોતાના નિર્મલ ચારિત્રનો નમુનો તેના આગળ કાં ન મૂકે? પોતે સાસરે જાય નહિ ને ગાંડીને શિખામણ કાં દે?

હાલમાં જે અસહકારની પ્રવૃત્તિ ચાલી રહીછે અને તેની જનતા ઉપર જે અસર થઇ છે તેનું કારણ યુરોપવાસીઓ પણ એકે અવાજે કહી રહ્યા છે કે મહાત્માજી જે ઉપદેશો આપે છે તે પ્રથમ પોતાનામાં મુર્તિમન્ત કરેછે અને ત્યારબાદજ જનસમુહ આગળ રજુ કરે છે. માટે પંડિતવર્ય! ઉપદેશકજી! આપ પ્રથમ ચારિત્રમય બનો અને પછી અમને ચારિત્ર પથપર દોરવા લાયક બનો. ઢોંગી બાહ્યાચારથી અમને ધોકામાં નાખવા વૃથા પ્રયત્ન ના કરો. હવે જમાનો સત્યયોગી થયો છે, માટે આપને સત્યપરાયણ થવું ઘટે છે. હવે સાંપ્રતકાલને પોલમપોલ અસહ્ય છે તે આપના લક્ષ બ્હાર નજ હોવું જોઇએ. મારા ઉપર કુપિત થઇ સામી લેખણી ચલાવવા જેટલું તો શાણપણ હું ધારૂં છું, આપ નહિજ વાપરો; કારણકે આપનો અંતરાત્માજ કબુલ કરશે કે આપેજ મને આ શબ્દો વાપરવાને કારણ આપ્યું છે. જે પંડિતો જે બ્રહ્મચારીઓ, જે ઉપદેશકો, જે ધર્મનેતાઓ નિઃસ્વાર્થ પણે શુદ્ધ હૃદયના પોતાના શુદ્ધ ચારિત્રનો નમુનો આગળ ધરી જનતાને આત્મજ્ઞાન કરવા ભગીરથ પ્રયત્નો કરી રહ્યા છે તેઓ તો મારે શિરસા વંદ્યજ છે તેમને વિષે તો મને બોલવા તથા લખવાનો બીલકુલ હક હોઇ શકેજ નહિ. અસ્તુ.

ધાર્મિક અંશ દરેક વ્યક્તિમાં ઓછા વત્તા પ્રમાણ હોય છેજ; પરંતુ તેને જેવું પોષણ મળે છે તે પ્રમાણમાં તે વ્યક્ત થાય છે. કેટલાકને ધાર્મિક લાગણીઓ પ્રબળ હોય છે તો કેટલાકને શિથિલ હોયછે; કેટલાક ધાર્મિક લાગણીઓ કેળવાતા દેખાય છે, તો કેટલાકને કેળવતા પ્રથમ પ્રવૃત્ત થઇ પાછા હઠતા માલૂમ પડેછે. આમ બનવું ઘણાં કારણો આધારભૂત છે, પરંતુ તેમાં ગૃહસંસ્કાર, વ્યવહાર, સોબત, અજ્ઞાન વગેરે મુખ્ય કારણો કહી શકાય. જૈન સમાજમાં યુવાનને અહિંસક બનવું ઘણું સરલ લાગે છે કારણકે તે સમાજજ એવો છે કે તેમાંથી તેને અનુરૂપ પોષણ મળ્યાજ રહે છે, જ્યારે યવન સમાજમાં વા ક્રિશ્ચિયન સમાજમાં ઉછરેલા યુવાનને અહિંસક બનવું જરી અઘરૂં લાગે છે; કારણકે તેની અહિંસક વૃત્તિ કેળવે પોષે તેવાં તત્વોનો તે સમાજમાં અભાવ હોય છે, યા તો તેવાં તત્વો ઘણાજ જુજ પ્રમાણમાં હોય છે હિન્દુ સમાજ ધાર્મિક લાગણીઓને જેવું પોષણ આપે છે તેવું પોષણ ભાગ્યેજ બીજું કોઇ સમાજ આપતું માલૂમ પડશે. સામાજીક પરિસ્થિતિ ગમે તેવી હોય પરંતુ જો ગૃહસંસ્કાર સારા હોય તો અનેક પ્રકારની અડચણો આવતા છતાં અસ્ખલિત ધાર્મિક લાગણી કેળવી શકાય છે. કેટલીક ક્ષુદ્ર જ્ઞાતિઓમાં પણ કેટલાક સંત પુરુષો થઇ ગયાની વાતો આપણે વાંચીએ છીએ, અને બારીકીથી તપાસ કરતાં માલૂમ પડે છે કે તેમનામાં ધર્મનો, દયાનો, ઝરો પેદા કરનાર અને પરિપોષક તેમના ગૃહસંસ્કારજ હોય છે. જે વ્યવહારોમાં રહીને આપણું જીવન વ્યતિત કરવું પડે છે તેમાંના કેટલાક એવા હોય છે કે તેઓ સુસંસ્કારિત ધાર્મિક અંશને પણ કેળવવાનું બાજુએ રાખતા આપણને પ્રેરે છે. સહચારે છે; અને કેટલાક એવા હોય છે કે તેમાં ધર્મ પંથથી ચલિત કરતા જેવા પ્રસંગો આવેજ બને છે. રેલ્વેખાતાના નોકરોને ડગલે અને પગલે લાંચ ખાવાના પ્રસંગો બને અને તેથી તેઓ ધર્મ વિરુદ્ધ આચરણ કરે અને કેળવણીખાતાના નોકરોને તેવા પ્રસંગો બહુજ ઓછાજ બને, તેથી તેઓ ગૃહસંસ્કારોથી પરિપોષિત ધાર્મિક વૃત્તિ જાળવી રહે એ સ્વાભાવિક છે. જો આવી ખરી કસોટીના પ્રસંગોમાં પણ ધાર્મિકવૃત્તિ રહે તેજ વીરપુરૂષ કહી શકાય જ્યાં સુધી ધર્મવિરુદ્ધ આચરણ કરવા પ્રેરે તેવા પ્રસંગો ઉપસ્થિત ન થાય ત્યાં સુધી ધર્મનો ડોળ કરે અને તેવા પ્રસંગો પ્રાપ્ત થતાં જે ધર્મવિમુખ થાય તેને તો ખરેખ બગભગતજ કહી શકાય. સોનાને શુદ્ધ થવાને અગ્નિમાંજ પ્રવેશવાનું હોવું સ્વપ્રથી ધાર્મિક અંશને પોષણ મળે છે, જ્યારે કુસંગતિ

વડોદરા-માં યુવક મંડળે દશ ધર્મના વિવેચનની પત્રિકાઓ છપાવી મફત વેંચી હતી.

ધર્ના.ચોક્ષ-માં શા૦ સાંકલચંદ ઝવેરચંદની પત્ની માણેકે દશ ઉપવાસ કર્યા હતા. ૩૦૦) ઉપજ થઇ હતી.

ઓરાણ-માં ૪૦ બાઇ બ્હેનોએ અનેક વ્રતો કર્યાં હતાં. બે પક્ષ હોવાથી જુદી જુદી પૂજા ભણાવી હતી. કુસંપને લીધે વરઘોડો નીકલ્યો હતો. ચાર દાનની ટીપ થઇ હતી. લીંગક્ષા ગામમાં એક હજામની સ્ત્રીએ ૮ ઉપવાસ કર્યા હતા.

ઝહેર-અત્રે એક બાઇએ ૧૬ ઉપવાસ કર્યા હતા તેમજ બીજા વ્રતો ૫૦-૬૦ બાઇ બ્હેનોએ કર્યાં હતાં. અત્રે નરસીપુરના ભાઇઓ સાથે ઘણાં વર્ષોથી ઝગડો છે તે મટતોજ નથી. એક બાજુ ૩૯ (ઝહેર,)ને બીજી બાજુ ૧૧ ઘર (નરસીપુર) છે ત્રણ વર્ષથી વરઘોડો પણ બંધ છે. આ વર્ષે ત્યાં ભ૦ સુરેંન્દ્રકીર્તિજીએ ચોમાસું કરેલું હતું છતાં કંઇ પણ સમાધાન ન થતાં ઝઘડો વિશેષ વધ્યો છે. ભટ્ટારકજી એક પક્ષી વલગ લઇ રહ્યા હતા એ ઠીક નહોતું. ભટ્ટારકજી લખે છે કે મારા તરફથી અષાઢ માસ ાં પોલીસ નહિ બોલાવાયલી પણ તે ભલે ગમે તેમ હોય પણ પોલીસ આવેલી એ તો નક્કી જ. વળી આરતી ઉતારવાની તકરારમાં ચૌદસની સાંજથી પડવાની સવાર સુધી રાત દિવસ દહેરાને દરવાજે પોલીસ ચોકી કરી રહી હતી એ ભટ્ટારકજીની હાજરીમાં શોભે ખરું કે? એમણે તો કેઇપણ રીતે સંપ કરાવવો જોઇતો હતો. અસલના ભટ્ટારકો એક રાજા જેવો કેટલો પ્રભાવ પાડી શકતા હતા તો આ ભટ્ટારકજી શ્રાવકો પર કાબૂ પણ ન રાખી શક્યા એ અજબ જેવું છે! મહારાજે એક પક્ષની પ્રભાવના ન લીધી તેથી પણ વિખવાદ વધ્યો છે. શાસ્ત્રસભા તથા પૂજામાં બંને પક્ષના આવીને બેસતા હતા એ તો ખુશી થવા જેવું છે. અમે તો ભટ્ટારકજીને હજી પણ સૂચિત કરીએ છિયે કે આપનો પ્રભાવ બંને પક્ષપર એક સરખો જમાવો ને આગલા પાછલા ઝઘડાઓનો નીકાલ ઝહેરથી જતાં પહેલાં કરાવી દઇ આપના ગુરૂ ગુણચંદ્રજીના માફક અમરકીર્તિ મુકી જાઓ. ગુણચંદ્રજી તો અનેક સ્થળે ઝઘડાઓ પતાવી આપતા હતા.

ઘોડાદર-થી શા૦ ફતેચંદ તારાચંદ લખે છે કે ડુંગરપુર તાબે દેવલ ગામમાં દિ૦ જૈન પાઠશાલા છે તેની પરીક્ષા લેવા હું ગયો હતો. ૩૦ વિદ્યાર્થી છે પણ મદદ બહુજ ઓછી હોવાથી આગળ નીભે એમ નથી જેથી જેવી રીતે તીર્થક્ષેત્ર કમેટી તરફથી છાણી નવાગામની પાઠશાળાને ૬૦) વાર્ષિક મદદ મળે છે, તેમ દેવલમાં પણ કંઇ નહિ તો ૩૦) પણ મદદ મળવી જોઇએ. આ તરફ ઘોડાદરમાં કુસંપ હોવાથી હજારો રૂપ્યા વકીલોમાં ખર્ચાઇ રહ્યા છે. દિગંબરીમાં આંગીનો રિવાજ ન હોવા છતાં કેટલાક તેવો મમત લઇ બેઠેલા છે એ અજબ જેવું છે. દેરોળમાં એક બાઇએ ૮ ઉપવાસ કર્યા હતા. તથા કર્મદહન ઉદ્યાપન કર્યું હતું. વળી અત્રે એક કુંભારણે ૧૦ ઉપવાસ કર્યા હતા જેનું ઉદ્યાપન કરાવ્યું હતું. આ બાઇએ માંસ મદિરા ત્યાગ કરી અનેક નિયમ લીધા હતા.

એજ પ્રમાણે ધારીસણા, સાણોદા, છાલા, વાસણા, ચોધરી, સદ્દ.જીનામુવાડા, સોનાસણ, ભાલેજ, અલુવા, પાનનાકુવા, બાકરોળ, નનાનપુર, રણાસણ વગેરે અનેક સ્થળેએ આ પર્વ સારી રીતે ઉજવાયાના સમાચાર એકઠા કરીને દિ૦જૈન યુવક મંડળ મુંબાઇએ મોકલી આપ્યા છે, જે સ્થાનાભાવને લીધે સંક્ષેપમાંજ લઇ શક્યા છિયે પણ યુવક મંડળનો આ પ્રયાસ અતિ ઉત્તમ અને પ્રશંસનીય છે.

તેનો વિચ્છેદ થાય છે. જડવાદને પોષવારૂપ અને પાશવશક્તિ કેળવવારૂપ જ્ઞાન, દયાના ઝરાને સુકવી દે છે, ધાર્મિક અંશનો વિધ્વંસ કરે છે. સ્કુલો અને કોલેજોમાં અપાતું જ્ઞાન પાશ્ચિમાત્ય સંસ્કૃતિને-જડવાદને સર્વપ્રકારે પોષે છે. (અપૂર્ણ)

फिरोजपुर–में पं० नरसिंहदासजीके पधारनेसे व ऐ० पन्नालालजीके होनेसे बहुत धर्म प्रभावना हुई। पंचायती मंदिरमें लिखित शास्त्र ही पढ़नेका यहां नियम होगया है।

कलकत्ते–में पर्व सानंद व्यतीत हुआ। पं० झम्मनलालजी, पं० गजाधरलालजी शास्त्र पढ़ते थे। पं० श्रीलाल व पं० मक्खनलालजीके कुछ अनुचित वर्तावसे पंचानमें कुछ अशांति हुई थी।

सोलापुर–में रावजीभाई, माणेकचंद अमोचंद आदि शास्त्र पढ़ते थे। यहां सकुबाईने १० उपवास किये थे।

धुलिया–में २० वर्षकी तकरार मिटकर यह पर्व सानंद व्यतीत हुआ था परन्तु अंतके दिन मालके लिये फिर तकरार हुई थी। खेर!

इन्दौर–के सभी तेरह मंदिरोंमें नित्य शास्त्र सभा होती थी। पं० कस्तूरचन्दजीके उपदेशसे खुश होकर सर सेठ हुकमचंदजीने उनको एक सुवर्णपदक दिया। रात्रिको प्रायः सेठजी खुद नित्य शास्त्र पढ़ते थे।

मलकापुर–में पं० सुमतिचन्द उपदेशकके पधारनेसे विशेष आनंद रहा व ५१) उपदेशक फंडमें हुए थे।

नवागाम–में २ बाईयोंने दश २ उपवास किये थे। यहां क्षुल्लक शांतिसागरजीके उपदेशसे पाठशालामें देशी औषधालय खुला है।

खंडवा–में पं० बिहारीलाल, पं० कन्हैयालालजी, पं० दरबारीलालजी, पं० कस्तूरचंदजी आदिके अनेक व्याख्यान हुए। पाठशाला, औषधालय, कुमार सभा आदिके अधिवेशन भी हुये तथा पुस्तकोंकी प्रभावना हुई। यहां ५० वर्षसे पोरवाडोंमें फूट थी जिसको तन मन धनसे मिटानेवाले सेठ गोपीकृष्णजीको मानपत्र दिया गया। दानकी वर्षा भी अच्छी हुई थी।

बम्बई–में यह पर्व धर्म प्रभावनाके साथ व्यतीत हुआ था। हम भी अंतिम दो दिन बम्बई पहुंचे थे। दोनों मंदिरोंमें नित्य दो दफे शास्त्रसभा होती थी। यहां हमारी भतीजी चंपाबाई (विधवा परी० लल्लुभाई प्रेमानंददास) ने १० उपवास किये थे व अन्य दो बहिनोंने ६-६ उपवास किये थे। चंपाबाईने पारणाके दिन १००) आबू, १००) दश संस्थाओंको व २५) श्राविकाश्रम बम्बईको दान किया था। चौदसको जुलूस भी निकला था। विशेषमें मारवाडी मंदिरमें करीब २००) मासिकका चंदा एक हिन्दी स्कूल खोलनेके लिये हुआ है जो मंदिरमें ही खुलेगी जिसमें नित्य ६ घंटे हिन्दीके साथ धर्मशिक्षा भी दी जायगी। मेनेजिंग कमेटी भी नियुक्त हुई है परंतु अभी कार्य चालू नहीं हुआ है।

नसीराबाद–में ब्र० चांदमलजीके पधारनेसे विशेष धर्मध्यानके साथ यह पर्व व्यतीत हुआ था।

जयपुर–में पं० मनोहरलाल शास्त्री व पं० शिवसुखरायजी शास्त्री पढ़ते थे। ब्र० आश्रममें आजकल ४० ब्रह्मचारी व ६ अध्यापक हैं।

औरंगाबाद–में ब्र० हीरालालजीके पधारनेसे शास्त्र सभामें व्याख्यानोंका अच्छा आनंद रहा। तीन भाईयोंने पाठशालाके विद्यार्थियोंको आहारदान दिया था।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस खपाटिया चकला,–सुरतमें मूलचंद किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" आफिस, चंदावाड़ी–सुरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।